स्वामी रामप्रकाशजी महाराज कृत

रामप्रकाश भजनमाला

प्रकाशक :

फूलचन्द बुकसेलर

पुरानी मंडी, अजमेर

ॐ

रामप्रकाश-भजन-माला

११७ आध्यात्मिक भजनों का
रचनात्मक सङ्गीत

रचयिता :

स्वामी रामप्रकाशजी महाराज

साहित्य शास्त्री, आचार्य
उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, जोधपुर

प्रकाशक :

आर्य ब्रदर्स बुकसेलर, पुरानी मंडी, अजमेर (राज.)

द्वितीय बार } १९८३ ई० { मूल्य ३)००

रचयिता :

स्वामी रामप्रकाशजी महाराज

साहित्य शास्त्री, आचार्य

'उत्तम आश्रम' कागामार्ग, जोधपुर

पुस्तक मिलने का पता—

(१) आर्य ब्रदर्स बुकसेलर, पुरानी मंडी, अजमेर 305001

(२) उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, जोधपुर 342000

मुद्रक :

आनन्द प्रिन्टर्स

कड़क्का चौक, अजमेर

॥ ॐ ॥

भारतीय समाज दर्शन, नशा खण्डनादि अनेक शास्त्रों के लेखक, संग्रहकर्ता, टीकाकार एवं संशोधनकर्ता
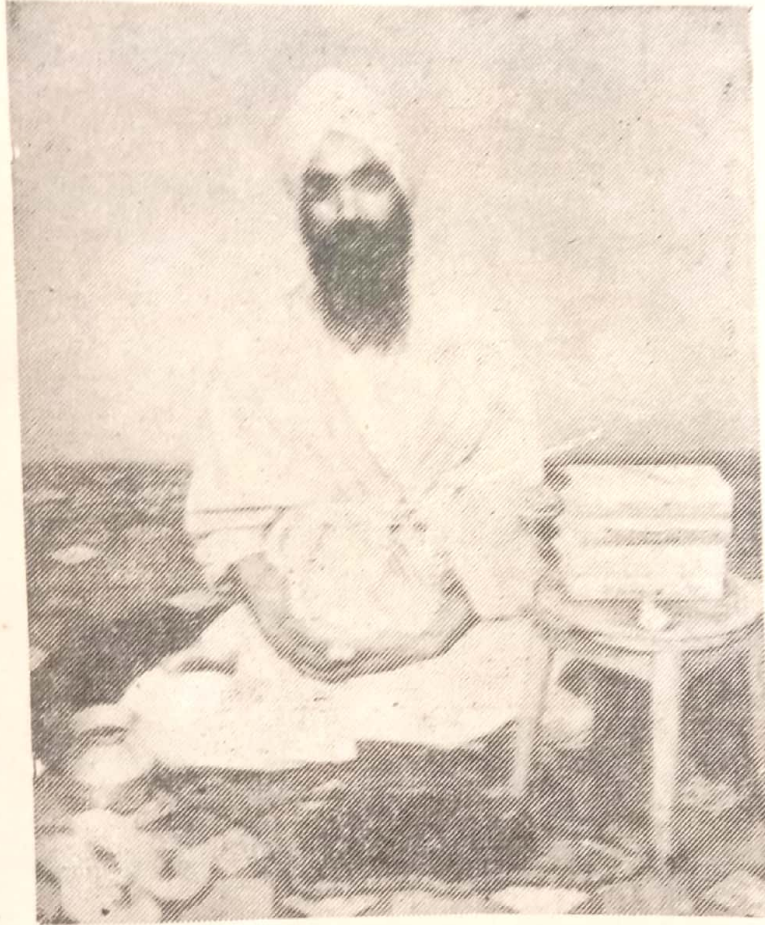
रामानन्दीय अग्रद्वार स्तम्भ सन्तदासोत रामस्नेही खण्डपीठ जोधपुर के महन्त

स्वामी रामप्रकाशजी महाराज अग्रावत

उत्तम आश्रम कागा मार्ग, जोधपुर (निवासी)

स्वामी रामप्रकाश जी महाराज कृत

रामप्रकाश–भजन–माला

भजन (१) राग गजल–दादरा पद

गणपति कर मोद, आनन्द भंडार दो । टेर॥
गवरी के बाल तुम, शंकर के लाल तुम ।
भक्त रखवाल तुम ज्ञान को विचार दो ॥१॥
ऋद्धि सिद्धि दाता तुम, जग के विधाता तुम ।
शुद्ध बुद्धि ज्ञाता तुम, शरण आधार दो ॥२॥
वेद भेद पूजा विधि, नहीं जानू कछु सिधि !
देवो आप कृपा ऋद्धि, मंगल सुधार दो ॥३॥
संत रामप्रकाश ये, मांगे कर जोर करि ।
ईश की शरण पड़ा, मोहि निस्तार दो ॥४॥

भजन (२) राग गजल, आरती पद

सतगुरु महाराज, मेरो सुन लीजिये ।।टेर।।
आप ब्रह्मा हरि हर, पारब्रह्म साक्षीधर ।
सोई आये देहधर, कृपा कोर कीजिये ।।१।।
संत मुनि वेद वाणी, गाय रहे गुणी जाणी ।
पार नाहिं निरवाणी, शरण मोहि दीजिये ।।२।।
महिमा अपार भारी, गावत शारद हारी ।
कहा मति मेरी धारी, पाप को हरीजिये ।।३।।
ज्ञान दे उत्तम गुरु, जनम मरण हर ।
संत रामप्रकाश यूं, मोक्ष पद लीजिये ।।४।।

भजन (३) राग ईमन, प्रभाती पद

हो गणनाथ सदा सुख सागर, आय करो दुःख दूर हमारे।।टेर।।
ध्यावत है कवि संत गुणी सब, कोविद शारद नारद सारे।।१।।
सिद्ध करो सब मंगल कारज, संकट मूल समूल हटारे ।।२।।
एक अधार तुम्ही गणनायक, मो उर आप उदार पधारे।।३।।
रामप्रकाश नमो गुण-ईश्वर, सो शरणागत दास पुकारे।।४।।

भजन (४) राग ईमन, कव्वा[illegible] प्रभाती ।

शंकर पूरण ब्रह्म नमो हर, मंगल कारन तारन हारे।।टेर।।
आप अपार कला गुण-सागर, सामर्थ-ज्ञान तपी मतवारे।।१।।
मोद बढे गुण-ज्ञान धरे उर, संकट दारिद दूर निवारे ।।२।।
काज करो यह दास शरणागत, काट विकार संदेह हमारे।।३।।
'रामप्रकाश' सदा शिव ध्यावत, पावत जावत आवत प्यारे।।४।।

भजन (५) राग देश धनाश्री, बधावा पद

सईयो । सतगुरु अविनाशो ए ।
नाश रहित सदा सुख सिन्धु, अचल प्रकाशी ए ।।टेर।।
अटल अगोचर निरालम्ब चेतन, सर्व अवासी ए ।
बन्धन मुक्त माया नहिं भाषे, चौरासी फांसी ए ।।१।।
अपना आप सदा शुद्ध महरम, आय न जासी ए ।
दृश्य प्रपंच सर्व तज फुरणा, दोष विनाशो ए ।।२।।
सन्त परमातम ज्ञान परमानन्द, सच्चिदानंद राशी ए ।
दे उपदेश सदा निरबन्धन, काटे लख पाशी ए ।।३।।
"उत्तराम" भेंट गुरु उत्तम, पाय जिज्ञासी ए ।
"रामप्रकाश" अनन्त अधिष्ठाना, आप विलाशी ए ।।४।।

भजन (६) राग देश धनाश्री, बधावा पद

सईयों ! वर भाग हमारा ए ।
आज हमारे संत पधारे, आनन्द अपारा ए ।।टेर।।

संत पधारया जा, उधारया, ज्ञान उचारा ए।
दोष निवारया कारज सारया, कर उपकारा ए ।।१।।
विकार विडारया बैरी टारया, किया भव पारा ए।
बंधन काटया विषय रस दाटया, साधन सुधारा ए ।।२।।
दर्शन देकर दोष हटाया, दिया सु विचारा ए।
सौम्य मूरति माधुरि सूरत, अखण्ड उजियारा ए ।।३।।
उत्तम गुरु साधन के शरणे, लख्या ततसारा ए।
"रामप्रकाश" उत्तम भया जीवन, धन्य धनकारा ए ।।४।।

भजन (७) राग धनाश्री, देश बधावा पद

सईयो ! सतसंग सुख खानो ए।
परसे होय आनन्द अपारा, भ्रान्ति भानी ए ।।टेर।।
जोव जिज्ञासु धरे उर धीरज, कष्ट मिटानी ए।
साधन सहित दोष तज सारे, भेद विलानी ए ।।१।।
सत व्याख्यान लखावे शुद्ध तूं, आप अबानी ए।
बन्धन मुक्त फन्द नहिं नाना, आप कल्यानी ए ।।२।।
ऊंच रु नीच तरे कर सतसंगत, अनंत सुजानी ए।
जाति आश्रम व्यशनी भव में, डूबे अभिमानी ए ।।३।।
उत्तमराम उत्तम कहै ज्ञाना, निर्णय निरवानी ए।
रामप्रकाश प्रसाद सन्तन कीं, होय दुःख हानी ए ।।४।।

भजन (८) राग धनाश्री, देश-बधावा पद

सईयों ! सुन बात हमारी ए ।
कर सोलह श्रृंगार सदा जा, सतसंग मँझारी ए ।। टेर ।।
बुद्धि पिया ब्रह्म संग करे सत, मुगति त्यारो ए ।
संशय दोय अध्यास मिटा हो, प्रीतम प्यारी ए ।। १ ।।
विवेक वैराग्य शम दम श्रद्धा, तितिक्षा सारी ए ।
समाधान उपराम मुमुक्षुता, ज्ञान विचारी ए ।। २ ।।
तन मन वचन शौच कर करणी, श्रवण धारी ए ।
वाक्य यथामृत मनण मान के, निदिध्यासन वारी ए ।। ३ ।।
बोद्ध ज्ञान साक्षात कर सोजी, सहज सुधारी ए ।
निर्गुण ब्रह्म अचल अभंगी, महिमा भारी ए ।।४।।
सतगुरु "उत्तमराम" ब्रह्मज्ञानी, काट विकारी ए ।
"रामप्रकाश" करी सत संगत, द्वैत विडारी ए ।।५।।

भजन (६) राग धनाश्री, देश बधावा पद

सईयों । गुरु उत्तम हमारा ए ।
उत्ताम ज्ञान पुकारे प्रकट, कर निरधारा ए ।।टेर।।
उत्तम साधन धरे उर उत्ताम, रमझ उचारा ए ।
उत्तम समझ सैन घट भीतर, लखे वर सारा ए ।।१।।
संशय विकार अज्ञान मिटावे, वचन उजारा ए ।
उत्तम जिज्ञासो बधावे निशिदिन, आनन्द भण्डारा ए ।।२।।
कष्ट कलेश रंज नहीं व्यापे, सच्चिदानन्द अपारा ए ।

जीव उद्धारे भव से तारे, बंश पलटारा ए ।। ६ ।।
"उत्तमराम" उत्तम ब्रह्मवेता, उत्तम अवतारा ए ।
"रामप्रकाश" उत्तम के शरणे, हुआ भवपारा ए ।। ४ ।।

भजन (१०) राग गजल काफी ३ पद

अहो गुरु देव स्वामी, दास पे दया रखना ।। टेर ।।
कृपा से दर्शन देकर के, मिटावो जाल माया का ।
अनुग्रह अनुराग करके, शिष्य अपना आप लखना ।। १ ।।
काट भ्रम भेद कर्मो का, लखावो एक ब्रह्म आतम ।
द्वैत का नाम क्रम तोड़ो, शीश पर हाथ रखना ।। २ ।।
संसार सागर मांहि, फूला फिरा जनमों में ।
अब हूं शरण में तेरो, दया की नजर पखना ।। ३ ।।
नमो गुरू देव को पूर्ण करूं कर अर्ज जोरे ।
"रामप्रकाश" भव तारो, मत दोष को देख अखना ।। ४ ।।

भजन [११] राग गजल काफी ताल ३ पद

कृपालु आप हैं स्वामी, मेरे गुरुदेव दाता ।। टेर ।।
निर्गुण से सगुण हो आये, मानव के रूप धाये ।
शरण में द्वार पर जाये, परम फल मोक्ष पाता ।। १ ।।
काटया सब फन्द भव भयका, बताया मार्ग साधन ।
लखाया ब्रह्म निर्बन्धन, मिटाया यम का खाता ।। २ ।।
जन्म मरण रोग कर दूरा, उत्तम गुरु वैद्य सत पूरा ।
जिज्ञासु श्रद्धा कर धारे, आनन्द घर सोई जाता ।। ३ ।।

आप सम नाहिं जग कोई, त्रिलोकी में नहीं होई ।
कह रामप्रकाश नमामी, निर्भय पद बैठ कर गाता ।। ४ ।।

भजन (१२) राग गजल ताल ३ पद

प्रभूता प्रभू तेरो, कौन कथ पार पावे ।। टेर ।।
कहीं त्रिगुण पंच मय सृष्टी, रूप धर आप बहु दृष्टी ।
दिखावे रूप कर नाना, सुरासुर सार गावे ।। १ ।।
बखाने रूप गुण नितही, शेष हर शारदा सबही ।
कल्प शत कोटि यदि बीते, रञ्च ना नजर आवे ।। २ ।।
गान्धर्व नाग धारी, मानव नर नार भारी ।
रचे क्षण लोक तिधारी, ताहि में आप भी समावे ।। ३ ।।
तूं ही अकाल अछेद्य, तूं ही प्रशासक अलीना ।
कथ रामप्रकाश को लीला, गाय के कौन शरमावे ।। ४ ।।

भजन (१३) राग आशा पद टोडी, आशावरी

धन गुरु ! महिमा आपकी भारी ।
खोजत खोजत पार न पाया, थाकी समझ हमारी ।। टेर ।।
जो जन शरणे आवे जिज्ञासु, धड़ से शीश उतारी ।
जीव शीव का संशय काटो, कर भव सागर पारी ।। १ ।।
पाप ताप दुःख कष्ट मिटावो, पल में लेवो सुधारी ।
वरद हस्त कृपायुत शिरधर, आर्त तुरंत उधारी ।। २ ।।
ज्ञान ध्यान गम रहस्य देवो, सत उपदेश उचारी ।
अपना रुप शुद्ध आप लखावो, आप परम उपकारी ।। ३ ।।

"उत्तमराम' गुरु [illegible]जी सुनजो, वार नमामि हजारी।
"रामप्रकाश" शरण [illegible] तेरी, वार वार बलिहारी ॥ ४ ॥

भजन (१४) राग आशा पद टोडी

गुरुजी ! दो वरदान सदाई।
भक्ति ज्ञान साधन संग पूरण, और इच्छा नहिं कांई ॥ टेर ॥
नहिं गुण सिद्धि माया नहीं चहिये, नाहीं छल चतुराई।
शिष्य कुटुम्ब भवन मठ आदिक, नहीं इच्छा रति राई ॥ १ ॥
स्वर्ग नर्क का शंसय नाहीं, दासी दास लुगाई।
सुत वित तात मात ना बंधव, रति अक्षेप न आई ॥ २ ॥
दृश्य बड़ाई वस्तु अमोलख, मान चमू समुदाई।
एषणा नाहिं स्वप्न में मोहि, कहुं ले शपथ दुहाई ॥ ३ ॥
तपस्या जाप मंत्रादिक निधियां, भोग पदारथ सांई।
मृषा सर्व कछु नहीं चाहूं, दो भक्ति सुखदाई ॥ ४ ॥
सतगुरु उत्तमराम कृपा कर सकल मनोरथ दाई।
"रामप्रकाश" जिज्ञासू अरजो, सांची खोल सुनाई ॥ ५ ॥

भजन (१५) राग आशा, टोडी पद

गुरुजी ! सुनलो अरज हमारी।
कर कृपा नित दर्शण दीजो, अपना विरद संभारी ॥ टेर ॥
मैं खल कामी नमक हरामी, नीच कुटिल भंडारी।
नहिं मति बोद्ध, विद्या बलहीना, नहि गुण ज्ञान अचारी। १।
तन मन वाणी दोष विकारी, अवगुण अनंत हजारी।
अति रति रंज विचार न मोमे, भूला जीव अनारी ॥ २ ॥

तुम गुरु सामर्थ कृपा के सागर, ध्यान ज्ञान गम धारी।
बुद्धि बल योग शक्ति भण्डारी, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥
दर्शण ते अघ ओघ नशावे, पाप रु ताप बिडारी।
भवसागर का मूल मिटे भय, आतम ज्ञान विचारी ॥ ४ ॥
सतगुरु "उत्तमराम" अनादी, ब्रह्मवेता सुखकारी।
रामप्रकाश की आर्त अरजी, दर्शण दो अवतारी ॥ ५ ॥

भजन (१६) राग आशा, टोडी पद प्रभाती

धन गुरु ! आप सदा ब्रह्मज्ञानी।
ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप अखण्डी, तनधारी महादानी ॥ टेर ॥
मिथ्या भ्रम फंस्यो नर भव में, ताको मुक्त करानी।
फन्दन काट बन्धन सब काट्या, दीवी मुक्ति निशानी ॥ १ ॥
कर उपदेश अनंत उधारया, नीच कुटिल अभिमानी।
कर सरोज धरिया शिर ऊपर, महा महिमा दरशानी ॥ २ ॥
निज सम निज दरशाया निजनिज, अविद्या भ्रान्ति मिटानी।
शुद्ध सनातन सत चित आतम, द्वैत अज्ञान नशानी ॥ ३ ॥
"उत्तमराम" उत्तम गुरु परस्या, देऊँ शीश कुरबानी।
"रामप्रकाश" पर कृपा कीजो, रमभ्र लखा अधिष्ठानी ॥ ४ ॥

भजन (१७) राग आशा, टोडी पद आशावरी

धन गुरु ! महिमा प्रबल पसारी।
गावत पार नहीं कभी आवे. अचल अपार अपारी ॥ टेर ॥
त्रिगुण प्रपंच सगुण हो निर्गुण. लीला कर विस्तारी।
राव रु रंक लोक परलोका. सूक्ष्म स्थूल प्रचारी ॥ १ ॥

हरि हर शक्ति प्राण [illegible] धारी, विधि सुर नर असुवारी ।
देख देख सब थकी मति [illegible]री, करूं परणाम विचारी ।।२।।
शेष, गणेश, दिनेश, धनेश कवि कोविद सुविचारी ।
सुरेश, नरेश, शारद, अो नारद, गुण गावत सब हारी ।।३।।
सतगुरु "उत्तमराम" गुरु की, महिमा पर बलिहारी ।
"रामप्रकाश" प्रेषक गुरु सबके, आदि रु अंत जुहारी ।।४।।

भजन (१८) राग आशा, टोडी, प्रभाती

धन गुरु ! इचरज खेल पसारा ।
मति अति रति भर पहुंच न पावे, नाना किया विस्तारा ।।टेर।।
कहीं दोष कहीं गुण के सागर, कहीं दिन घोर अंधारा ।
भ्रम सागर भव ऊंच रु, नीचु, कहीं हंस काग अचारा ।।१।।
सुख दुःख सुर नर गान्धर्व बहुते, नाग रु असुर अपारा ।
नाक पताल मृत्यु अपवर्गा, नाना विधान उचारा ।।२।।
हरि हर सृष्टा शेष गणेशा, रवि कवि शक्ति विचारा ।
अद्वितीय अलौकिक, नाना लीला, रंक राव सरदारा ।।३।।
"उत्तमराम' उत्तम रचि सृष्टि, वक्तव्य कर्त्तव्य उदारा ।
"रामप्रकाश" गुरु निर्लेपी, अविगत निष्कर्म प्यारा ।।४।।

भजन (१९) राग आशा, टोडी पद प्रभाती

धन गुरु ! सांचा ज्ञान लखाया ।
काटया भ्रम भ्रान्ति विकारा, अपना स्वरूप दरशाया ।।टेर।।
शुन धुन गुन परा पर भाख्या, परमानन्द परसाया ।
वाणी बैखरी इति शब्द माया, मुक्ति स्वरूप अमाया ।।१।।

ज्ञान ध्यान दोऊ गम थाकी, अगम अ[illegible]चर पाया।
योग भोग क्रिया सब विकशी, अवि[illegible] अज्ञान विलाया।।२।।
भक्ति शक्ति प्रपंच नष्ठ हो, कर्म कलाप मिटाया।
पांच तीन की सृष्टी नाहि, केवल आप अथाया।।३।।
"उत्तमराम" उत्ताम गुरु ज्ञानी, सच्चिदानन्द अजाया।
"रामप्रकाश" गुरु गम समझी, रमझ सुजान समाया।।४।।

भजन (२०) राग आशा, पद टोडी, प्रभाती

धन गुरु! चरणों पर बलिहारी।
जाकी रज परस निज पाया, भ्रम अज्ञान विडारी।।टेर।।
साधन सार जार मल मोचन, हार रु जीत विसारी।
मायिक टार कलेश त्रिगुण को, भ्रान्ति अविद्या टारी।।१।।
फन्दन बंध विकार मिटाया, ममता त्वंता मारी।
योग कला का कष्ट विडारया, भोग रु रोग मिटारी।।२।।
सर्वातीत अगोचर चेतन, अपना स्वरूप अपारी।
अटल अनामीं इक रस सोई, आत्म लख्या ततसारी।।३।।
उत्तमराम, उत्तम ब्रह्मवेता, जाकी प्रसाद सुधारी।
'रामप्रकाश' गुरु तत चेतन, वाणी ब्रह्म विचारी।।४।।

भजन (२१) राग आशा, टोडी, प्रभाती

सतगुरु! मेरी शुध अब लीजे।
आया शरण जिज्ञासू आर्त, दया दास पर कीजे।।टेर।।
कईक जन्म खोया अविद्या में, नर तन छिन छिन छीजे।
भ्रमभव से डर शरणे आयो, शरण पद्म पद दीजे।।१।।

भक्ति ज्ञान बोद्य रस प्याला, आज्ञा दो यह पीजे ।
त्रिगुण प्रपंच कलेश अघादिक, भव भय दूर हरीजे ।।२।।
आतम रूप अखण्ड अगोचर, ताको रमझ लखीजे ।
ज्ञान ध्यान गम देकर स्वामी, आवागमन मिटीजे ।।३।।
'उत्तमराम' कृपा कर उत्तम, शिष्य की सार लहीजे ।
'रामप्रकाश' अनादि चेला, ज्ञान ध्यान गम दीजे ।।४।।

भजन (२२) राग आशा, टोडी पद प्रभाती

सतगुरु ! मैं हूं शरण तुम्हारी ।
हरदम तुम में लगी लगन है आठ पहर इक सारी ।।टेर।।
तुम ठाकुर मैं चाकर तुमको, में भव के मंझधारी ।
हम अपकारीं तुम उपकारी, अब तुम हो पतवारी ।।१।।
तुम हो भानु रश्मि में तेरी, चन्द्र चकोर विचारी ।
तुम हो कमल भंवर मैं तेरा, घन चातक सम यारी ।।६।।
तुम जल मैं हूं मीन पियासी, जेलर जेली समधारी ।
सब विधि हीन युक्ति दे मुक्ति, कर भवसागर पारी ।।३।।
मो से तुमको बहुत मिलेंगे, मेरे तुम आधारी ।
'उत्तामराम प्रकाश' दयाकर, सुनलो अर्ज हमारी ।।४।।

भजन (२३) राग आशा, टोडी पद प्रभाती

प्रभू बिन ! मैं हूं विरह दुःखारी ।
हरदम हरि की राह निहाँरु, विरहनि व्याकुल भारी ।।टेर।।
खान रु पान ज्ञान गम भूली, भुक्षण भोग शृँगारी ।

योग समाधि शुद्धि न रञ्चक, पूजा [illegible] आचारी ॥१॥
कान रु मान कुटुम्ब कुल न्याति, सब [illegible] मोह विसारी।
केवल तुमरे दर्शन के हित, तात तजी महतारी ॥२॥
विरह में मस्त जंगल मठ तीर्थ, गिरि तरु तर रहनारी।
उर में नाम निशाना खटुके, सुन घनश्याम मुरारी ॥३॥
कृपा कर हरि दर्शन दीजे, भव भ्रम टार विकारी।
'रामप्रकाश' शरण है तेरी, आय करो भव पारी ॥४॥

भजन (२४) राग आशा, टोडी पद

प्रभु बिन ! केसे जीवन बिताऊँ।
हरदम तार लगी उर खटुके, विरह निशान घुराऊं ॥टेर॥
पिव बिन भोग सकल जग सूना, खान पान नहीं खाऊँ।
बिलखत रोय रही दिन राती; गुण तेरे नित गाऊँ ॥१॥
प्रीतम ढूँढन वन वन दौड़ी, तीरथ खोज लगाऊँ।
कहाँ मिले सुख भूलो भटकुँ नाम ठौर बिन धाऊँ ॥२॥
मैं मन मैल भरी तन भीतर, तो मन कैसे भाऊँ।
जो तूं खबर लेत नहीं मेरी, नहीं ठौर कित जाऊँ ॥३॥
शरण पड़ी अब आप भरोसो, आप मिले पतियाऊँ।
"रामप्रकाश" दासी की अरजी, सुनो श्याम घर पाऊं ॥४॥

भजन (२४) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! गुरु की गम लो सारा।
सतगुरु शरण बिना गम नांही, भूला फिरत गंवारा।
कर सतसंग साधन को पूजा, रमझ समझ सत प्यारा।

दम में गम ले हर[illegible] खोजो, भ्रम अज्ञान विडारा ।। १ ।।
तर्क वाद पन्थ तजो क[illegible]ना, धार मर्याद विचारा ।
शुद्ध कर ज्ञान ध्यान उर शोधन, नेम प्रेम आचारा ।। २ ।।
गुरु की गम बिन डूबत सारे, साधक सिद्ध अवतारा ।
गम को शम कर तत्व पिछाण्या हो भवसागर पारा ।। ३ ।।
"उत्तमराम" उत्तम गुरु ज्ञानी, सोई करत ऊद्धारा ।
"रामप्रकाश" निश्चय कर निर्भय, जनम मरण नही धारा ।४।

भजन (२६) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! गुरू की रमझ अचाई ।
सैन लखे सो परम जिज्ञासु, शीश काट पद पाई ।। टेर ।।
वेद पुराण उपनिषद सारा, पन्थ ग्रन्थ मत ताई ।
देव रु दानव मानुष नाग लौ, वरणत पार न आई ।। १ ।।
शैष शारदा मुनि ऋषि आदि कवि अनुभवि नित गाई ।
पार न पाय रमझ गम गाढी, सदा अचल इकराई ।। २ ।।
सत संगत के साधन करके, सन्त कृपा सुधराई ।
गुरु की प्रसाद पुरुषार्थ अपनी, तब कछु सार लखाई ।। ३ ।।
"उत्तमराम" उत्तम ब्रह्मज्ञानी, अद्वैत अनन्त अजाई ।
"रामप्रकाश" महर कर मुरशिद, गम अनुभव दरशाई ।। ४ ।।

भजन (२७) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! सोई गुरु का बाला ।
नेम प्रेम गुरु नीति-साधन, धारे उर उजवाला ।। टेर ।।
जाति विद्या कुल तन अभिमानी, काट विकार जंजाला ।

सतसंग करे निर्मल वाणी, ज्ञान ध्यान संभाला ॥ १ ॥
व्यशन दोष टार दम्भ आदिक, जपे नाम को माला ।
सतगुरू सन्मुख हरदम हालत, खोल कपट का ताला ॥ २ ॥
त्रिगुण रहित सत चेतन जाणे, युक्ति जान विशाला ।
द्वंद रहित हो विचरे जग में, बन्ध मुक्ति दोऊं टाला ॥ ३ ॥
कर उपकार सुधारो प्राणी, सतगुरू देव कृपाला ।
'रामप्रकाश' उत्ताम के शरणे, पाया आप अकाला ॥ ४ ॥

भजन (२८) राग आशावरी पद प्रभाती

साधोभाई ! गुरू का बाला सोई ।
गुरू की रीति रमझ में समझे, सुरत शब्द में पोई ॥ टेर ॥
कपट दम्भ छल त्याग विकारा, द्वंद्व द्वेत तज दोई ।
साधन सतसंग नेम प्रेम में, निर्भय रहै निरमोई ॥ १ ॥
सत उपकार गुरू का जाने, भरम भ्रांति मल खोई ।
होय कृतज्ञ रखे उरनीति, सरल स्वभाव रहे जोई ॥ २ ॥
भक्ति ज्ञान साधन रस पूर्ण, वाणि कहै अनुभोई ।
करे ना पाखण्ड पेट भरण का, सदा रहे निरभोई ॥ ३ ॥
'उत्तमराम' उत्ताम गुरु ज्ञानी, कर कृपा कहै तोई ।
'रामप्रकाश' निज में गलताना, पक्षवाद नहीं कोई ॥ ४ ॥

भजन (२६) राग आशवरी पद प्रभाती

साधो भाई ! गुरु की शरण सुखदाई ।
शरणे जाय परम पद पावे, नुगरा सगुण हो जाई ॥ टेर ॥
सतसंग रमझ समझ में आती, दोष विकार विलाई ।

संशय भ्रान्ति द्वंद[illegible]ा फन्दा, भरम अज्ञान मिटाई ॥ १ ॥
स्मरण तपस्या साधन [illegible]ती, कटे चौरासी खाई ।
सतगूरू स्वामी सदा ब्रह्म वेता, निर्भय वचन फरमाई ॥ २ ॥
लोक परलोक विषय रस त्यागे, अखण्डानन्द दरशाई ।
जग के भोग रोग तज दूरा, परमानन्द पद पाई ॥ ३ ॥
'उत्तमराम' गुरू कृपा करके, अनुभव युक्ति लखाई ।
'रामप्रकाश' गूरू गम पाया, अपना आप अचाई ॥ ४ ॥

भजन (३०) राग आशावरी पद आशा

साधो भाई ! गुरू सकल गुण दाता ।
उत्तम गुरु हरदम मन भावे, विदित विश्व विख्याता ॥टेर॥
शील योग भक्ति ले साधन, कर कृपा परशाता ।
ज्ञान ध्यान धुन गम कर युक्ति, वेद विधि बतलाता ॥ १ ॥
जीव शीव ब्रह्म भेद माया का, कर निर्णय दरशाता ।
भ्रान्ति भ्रम कर्म सब व्यशन, अवगुण दूर नशाता ॥ २ ॥
दे दृष्टान्त सिद्धान्त प्रमाणा, बार बार समझाता ।
उत्तम गुरु की उत्तम सैन को, उत्ताम जिज्ञासु पाता ॥ ३ ॥
'उत्तमराम' ब्रह्मश्रोत्रीय निष्ठा, सतगुरु आप विधाता ।
"रामप्रकाश" प्रसाद गुरू का, निर्भय आपको ध्याता ॥ ४ ॥

भजन (३१) राग आशावरी पद आशा

साधो भाई ! है सोई गुरू का चेला ।
साधन संग रमझ उर समझे, हरदम गुरू के भेला ॥ टेर ॥
जगत संग त्रिगुण धुन्द तोड़ा, हरदम रहत अकेला ।

व्यशन विकार अज्ञान मिटावे, मन में नाँह मेला ।।१।।
मोह फन्द को काट बगावे, सहै शब्द का सैला ।
शींश काट गुरु चरणे राखे, शरण रहत सबैला ।।२।।
ज्ञान ध्यान गम योग युक्ति ले, हरदम बाँधे बेला ।
अविद्या अज्ञान जीव अरु ईश्वर, त्याग सर्व का गेला ।।३।।
अपना, स्वरूप ब्रह्म निज जाणे, पन्थ ग्रन्थ तज पेला ।
"रामप्रकाश" उत्ताम हो ज्ञानी, माने गुरु का हेला ।।४।।

भजन (३२) राग आशावरी पद टोडी

साधोभाई ! गुरु गम झीनी झीनी ।
गुरु साधन प्रसाद संतन की, रमझ समझ कर लीनी ।।टेर।।
गोप्य ज्ञान सत पूर्ण यथार्थ, महरम युक्ति चीनी ।
जड़ी ज्ञान ध्यान गम बूटी, निर्भय होकर पीनी ।।१।।
सांचा शिष्य समझ कर सतगुरु, बेहद की गम दीनी ।
रमझ विचार किया उर निश्चय, ब्रह्मानन्द धी भीनी ।।२।।
गुरु को सार लखे नहि कोई, दानव देव गुण तीनी ।
विरला लखे कोई हरि का प्यारा, गम द्वैत दुःख हीनी ।।३।।
'उत्तामराम' उत्तम गम दाता, रमझ अद्वैत प्रवीनी ।
'रामप्रकाश, सत परम पुरातन, गम शम ज्ञान नवीनी ।।४।।

भजन (३३) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! गुरु गम भेद निहारो ।
अपना आप लखो सुख कन्दा, भ्रान्ति भ्रम विडारो ।।टेर।।
साधन सार मार मद मारो, सर्व विकार संहारो ।

पांचू उलट ज्ञान सु ध्यानी, बुद्धि में योग विचारो ।।१।।
जप मुद्रा चौबीस कहीजे, पांच योग की धारो।
क्रिया योग मुद्रा सिद्ध करना, आसन सिद्ध उचारो ।।२।।
धूणी पाणी सिद्ध रहणी करणी, हरदम समरण सारो।
गुरु का शब्द हृदय में झेलो, जनम मरण को टारो ।।३।।
सतसंगत कर महर मुरशिद की, कर्मयोग पथहारो।
"रामप्रकाश" उत्तम के शरणे, ज्ञानयोग दीदारो ।।४।।

भजन [३४] राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! निर्भय गुरु का डंका।
गुरु की समझ लखे शिष पूरा, पावे पद कोई बंका ।।टेर।।
वचन विचार समझ दे अपनी, काटे त्रिगुण का तंका।
पांच पचीस प्रपंच बिलावे, काटे संशय शंका ।।१।।
निरमल निरावर्ण एक दरशावे, जाल कर्म की लंका।
सूता जीव जगावे पल में, लगा शब्द टाटंका ।।२।।
सुधा सिन्धु में निर्मल युक्ति, ज्ञान ध्यान गम झंका।
जो कोई न्हावे परम पद पावे, नाश होय सब पंका ।।३।।
उत्तमराम निश्चय शुद्ध निर्भय, नहीं कोई राव रू रंका।
"रामप्रकाश" सतगुरू की कृपा, हरदम रहत निशंका ।।४।।

भजन (३५) राग आशावरी पद आशा

साधो भाई ! कोई जन लखत निशाणी।
अति रहस्य मय गूढ ज्ञान गति, ब्रह्म स्वरूप गुरू वाणी ।टेर।
युक्ति योग ज्ञान गम मुक्ति, संत स्वरूप दरशाणी।

भयावक रोचक परम यथार्थ, युक्ति सहित परमाणी ।।१।।
बोद्ध परमार्थ नीति अनुपम, तीन लोक सुखखाणी ।
वेद विधान शास्त्र मत पूरा, अनुभव अमिय बखाणी ।।२।।
मंत्र योग हठ राज वर लयको, निर्णय शोधन जाणी ।
सारा सार विचार बताओ, दूध अलग कर पाणी ।।३।।
न्याय स्वरूप निश्चय कर निर्भय, साधन सर्व सुजाणी ।
परम जिज्ञासू शूरा समझे, जानत नांहि अजाणी ।।४।।
'उत्तमराम' सतगुरु की कृपा, सतगुरु आप अबाणी ।
"रामप्रकाश" लखीकर युक्ति पाया पद निरवाणी ।।५।।

भजन (३) राग आशावरी पद आशा

साधो भाई ! सो गम है निरवाणी ।
गुरु को गम कही ना जावे, गोचर बिना अबाणी ।।टेर।।
जाकी गतिमति साधन युतहो, निर्मल भाव पिछाणी ।
गुरु कृपा संत भेद बतावे, कर पुरुषार्थ जाणी ।।१।।
शेष शारदा कवि हरिहर जो, सृष्टा मुनि जन काणी ।
गावत कहत सुनत सब थकिया, गम है रहस्य भराणी ।।२।।
गुरु कृपा जिन गम को जाणी, मिट गई खैंचा ताणी ।
परमानन्द में उलट समाया, अविद्या भ्रांति विलाणी ।।३।।
'उत्तमराम' ज्ञानी गुरू उत्तम, नहीं लाभ नहीं हाणी ।
"रामप्रकाश" गमगम कर गम को, सहज लखी गुरुवाणी ।४।

भजन (३७) राग आशावरी पद आशा

साधोभाई ! गुरु की गम कर हेरी ।

गोप्य रहस्य की चेतन वारता, उर अन्तर गम फेरी ।।टेर।।
ज्ञान ध्यान की युक्ति थाकी, योग सार को सेरी ।
गुण सब पांच तीन भी थकिया, नहीं जहां माया चेरी ।।१।।
दृश्य दर्शन जहां नही दृष्ठा, हुँ तूँ नाहिं मेरी ।
भ्रान्ति विचार अज्ञान न कोई, नही गम मेरी तेरी ।।२।।
मन बाणी तन सगुण निर्गुण, नहिं कोई बाजा भेरी ।
डंका बंका शंका संशय, नही त्रिलोक की लेरी ।।३।।
गुरु गम चेला नही गुरुजी, निर्भय अनुभव टेरी ।
"रामप्रकाश" एक सत सोई, नाम रुप नही नेरी ।।४।।

भजन (३८) राग आशावरी पद टोडी

सोधोभाई ! नुगरा नीच सदाई ।
शिक्षा सांच धरे नहिं उर में, निशदिन फेल मचाई ।।टेर।।
हरि गुरु से रुठा चाले, माया में चित लाई ।
सतसंग की रीति को त्यागे, पाखण्ड चाल चलाई ।।१।।
नट खट वंचक व्यशक धुतारी, बना विकारो भाई ।
कथा भक्ति बिन मद में माता, सीधा यमपुर जाई ।।२।।
शुभ भावना क्रिया त्यागी, भ्रम रहा भटकाई ।
साधन संग करे जो कोई, ताको कष्ट पहुंचाई ।।३।।
सतगुरु बिना मुक्ति नहि पावे, वेद साख फरमाई ।
"रामप्रकाश" उत्तम का चेला, निर्भय हूवा पद पाई ।।४।।

भजन (३९) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! साँची कहूं पुकारी ।
नुगरा प्राणी समझत नाहि, गई मती सब मारी ।।टेर।।

साधन करे सतसंग में प्रीति, गुरुगम ध्यान विचारी ।
कथा ब्रतादि नेम प्रेम कर, सूधा कर आचारी ॥१॥
हरदम दम की गम समावे, शमदम शील सुधारी ।
सोई परम पद पावे पूरा, सांचा संत इतबारी ॥२॥
नुगरा बेमुख डोलत भव में, रमझ समझ तज सारी ।
झूठा विषय रस भोगे भूँडा, जनम मरण भवधारी ॥३॥
''उत्तमराम' उत्तम गुरु ज्ञानो, ताकी शरण सुखकारी ।
''रामप्रकाश' बैष्णव की वाणी प्रकट सार उचारी ॥४॥

भजन (४०) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! सन्त लखे कोई ज्ञानी ।
रमझ कहुँ समझे साई विरला, क्या समझे अभिमानी ।टेर।
त्रिगुण सार नही जग मिथ्या, जाल अविध्या मरिठानी ।
अविद्या फन्द माया का बंधन, इन्द्र जाल परमानी ॥१॥
मृग तष्णा जल ठूँठ पुरुष सो, वंध्या सुत बलवानी ।
सीपी रूपा असत भास ये, निर्णय करत सुजानी ॥२॥
एक अगोचर पूर्ण अविनाशी, अटल अथाह अधिष्ठानी ।
चेतन ब्रह्म अनादि अनन्ता, परम पुरुष निरवानी ॥३॥
"उत्तमराम" अद्वैत परमानन्द, हूँ तूँ द्वैत विलानी ।
''रामप्रकाश' सोई सत आतम, या भिन्न असत बखानी ।४।

भजन (४१) राग आशावरी पद टोडी

साधोभाई ! मेरी कुदरत यह सारी ।
सब से न्यारा व्यापक सब में, मेरी सता विस्तारी ॥टेर॥

कुदरत कर फुरणा उपजाया, त्रिगुण कला पसारी ।
विधि हरि हर पंच शक्ति दिनेशा, देव तत्व गुलजारी ॥१॥
पंच भूत जग नाम रूप में, नाना रंग विचारी ।
सब आधीन मेरे आधारा, मैं सर्वाधिकारी ॥२॥
जीव शीव की कुदरत कल्पित, भ्रान्ति भ्रम अचारी ।
सुख दुःख रंक राव हर्ष माया, अविद्या भास संसारी ॥३॥
सबका प्रेरक कर्ता हर्ता, नित निरलेप अपारी ।
'रामप्रकाश' अखण्ड अजपूरण, सर्वातीत निरधारी ॥४॥

भजन (४२) राग आशावरी पद टोडी

साधोभाई ! मेरा भेद निराला ।
व्यापक सब में न्यारा पूरण, परमानन्द मतवाला ॥टेर॥
मेरा भेद जानू निज अपना, विरला गुरू का बाला ।
जारणत मोहि मोहि मय होवे, त्रिगुण भ्रम फंद टाला ॥१॥
द्वैत अज्ञान अविद्या हीनां, नहीं माया का चाला ।
नर सुर नार असुर जग सृष्टि, नहीं प्रपंच जंजाला ॥२॥
सब में खेलूँ ख्याल रचाऊँ, सदा अखण्ड अकाला ।
मन बुद्धि चित लखे नहिं कोई, मेरा भेद सुखाला ॥३॥
"उत्तमराम" अचल अज चेतन, एक अगोचर हाला ।
"रामप्रकाश" सोई अधिष्ठाना, वाणी खाणी नहिं ख्याला ॥४॥

भजन (४३) राग आशावरी पद प्रभाती

साधोभाई ! महरम कर परखाई ।
अपना आप और नहीं कोई, भ्रान्ति भ्रम बिलाई ॥टेर॥

जीव न ईश माया ब्रह्म नाहीं, सगुण निगुण दो काई।
द्वैत अद्वैत द्वंद ना द्वंदी, सृष्टा सृष्टी विलाई ॥१॥
कर्ता क्रिया कर्म नहीं कोई, लोक परलोक मिटाई।
त्रिगुण पांच की नहीं कल्पना, वाणी चार समाई ॥२॥
वक्ता श्रोता पुण्य नहीं पापी, दृश्य पदारथ नाई।
नाम रूप वपु एक न कोई दृष्टा दृश्य अजाई ॥३॥
'उत्तमराम' व्यापक ब्रह्म पूरण, ज्ञान ध्यान इति थाई।
"रामप्रकाश" सच्चिदानंद केवल, सब की गती थकाई ॥४॥

भजन (४४) राग आशावरी पद प्रभाती

साधो भाई ! एक ब्रह्म निराधारा।
परमानन्द अगोचर केवल, अखण्ड अवाणी अपारा ॥टेर॥
परा पश्यन्ति मध्यमा बैखरी, वाणी चार विडारी।
चित चेतन की महरम पूर्ण, मन बुद्धि चित्त अहंकारा ॥१॥
पांच तत्व की नहीं कल्पना, नहीं त्रिगुण विस्तारा।
वेद भेद सब ग्रन्थ पन्थ का, सब ही थक्या विचारा ॥२॥
सिद्ध साधक की गति विलानी, भोग योग सब हारा।
ज्ञान अवस्था ध्यान भूमिका गुरु चेला भ्रम टारा ॥३॥
काव्य भव्यता काल जालना, दोय पांच नही चारा।
'रामप्रकाश' उत्तम चिद अपना, नहीं कछु बंध विस्तारा ॥४॥

भजन (४५) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! वाणी परे अचाई।
चार वाणी की गम सब थाकी, परे पार ब्रह्म पाई ॥टेर॥

नाभी शुन में परा संस्फुरणा, जड़ अविद्या की मई।
हृदय शुन पश्यन्ति विचरे, करत विचार अघाई ॥१॥
कण्ठ शुन में मध्यमा उत्सुक, वाक्य प्रभाव जनाई।
मुख शुन में वाणी बैखरी, शब्द प्रचार ठहराई ॥२॥
माया! कारण कार्य अविद्या, ता सब जाल बिछाई।
सगुण निर्गुण की करी कल्पना, छाया रहस्य लखाई ॥३॥
ब्रह्म अखण्डी एक अगोचर, परमानन्द परसाई।
'रामप्रकाश' मैं दृश्य दृष्टा नहिं, वाणी गम विलाई ॥४॥

भजन (४) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! है चेतन निरवाणी।
अपना आप अपार परमानन्द, अखण्ड सुजात अबाणी ॥टेर॥
जगत विकार भास नहिं कोई, सर्व अध्यास विलाणी।
संख्या सूचि मेरु पताका, नाम, रु रूप विलाणी ॥१॥
कर्म उपासन भरम रू भांति, संशय सन्देह कहाणी।
द्वैत अद्वैत आप नही अपना, भई सर्व की हाणी ॥२॥
तूला मूला भाव संसारा, दृश्य जगत चव खाणी।
सब से न्यारा सब में पूर्ण, निर अक्षर परमाणी ॥३॥
'उतमराम' गुरू मय चेला, नही कोई खैंचा ताणी।
'रामप्रकाश' सोई ब्रह्म आदू, अपना आद पिछाणी ॥४॥

भजन (४७) राग आशावरी पद

साधोभाई ! मेरा स्वरूप मैं जाना।
मेरे बिना कोई और न भासे, अपना आप अधिष्ठाना ॥१॥

पांच तीन का नहीं पसारा, हूं तूँ द्वैत बिलाना।
वाणी चार रश्च नहीं स्पर्श, निज अनुभव परमाना ॥१॥
आप गमाया आप ही पाया, भ्रान्ति अभाश मिटाना।
अविद्या शब्द अर्थ नहीं क्रिया, भाव अभाव हटाना ॥२॥
योग न रोग भोग नहीं भुक्ता, साक्षो ब्रह्म दरशाना।
तन हेतु नहीं कर्म न कारण, वक्ता श्रोता तरशाना ॥३॥
'उत्तमराम' गुरू नही चेला, सिंधु में लहर समाना।
'रामप्रकाश' सच्चिदानन्द चेतन, केवल आप रहाना ॥४॥

भजन (४८) राग आशावरी पद

साधोभाई ! निज अनुभव गम आणी।
अपना चेतन आप पिछाण्या, भई त्रिगुण की हाणी ॥टेर॥
निज मैं निज और नही दरशे, अविद्या नही चव खाणी।
मन की गम दम नाही पहुंचे, थक गई चारों वाणी ॥१॥
तीन अवस्था कोश न पांचों, सबकी थाह विलाणी।
द्वैत अद्वैत भास प्रति भासा, जीव ईश नही जाणी ॥२॥
जाणनहार सदा शुद्ध चेतन, निज को निज पिछाणी।
योगी न योगी भोग न भोगी, पांचो तत्व मिटाणी ॥३॥
अनुलोम प्रतिलोम थकाया, ज्ञान ध्यान निरवाणी।
'रामप्रकाश' अहं ब्रह्म चेतन, प्रभा प्रकाश अबाणी ॥४॥

भजन (४९) राग आशावरी पद

साधोभाई ! यह माया का खिलका।
त्रिगुण फन्द प्रपंच जाल में, नाटक सब हिलमिलका ॥टेर॥

दृश्य बिकार अविद्या माहि, ज्यूं भोडल का भलका।
भ्रान्ति अभाश अज्ञान में दरशे, दर्पण में रवि चिलका ॥१॥
नर नारीं जग खेल रचाया, कहीं सुमेरु कहि तिलक।
तीन लोक नाना रच वस्तु, स्वप्ना समकर कल का ॥२॥
चौदह लोक देवासुर सृष्टी, खेल सभी क्षण पलका।
सन्त लखे गुण झूंठा जादू, इन्द्र जाल ज्यों छलका ॥३॥
माया परे ब्रह्म शुद्ध चेतन, नही भारी नहि हलका।
'रामप्रकाश' गुरु गम गुरु जाण्या, निश्चय एक अटल का ॥४॥

भजन (५०) राग आशावरी पद टोडी

साधोभाई ! यह जग भ्रम अंधारा।
अविद्या में नर नारि भूला, गुरु गम बिना भवधारा ॥टेर॥
मात पिता कुल सुत वित न्याति, नोंच ऊंच परिवारा।
कर्म जंजीर जड़ी अति गाढी, छूटत नाहि लिगारा ॥१॥
माया मोह मद मार क्रोधादि, या वश मत हो प्यारा।
लपट्या विषय रस निज नहिं जाण्या, बाधा भ्रम मंभारा ॥२॥
जनम मरण भव भ्रमण चौरासी, डूबे मूढ जन सारा।
सतसंग गुरु बिन पार न पावे, साचा कहुं पुकारा ॥३॥
सतगुरु "उत्तमराम" कृपालू, शिष्य का करत उद्धारा।
"रामप्रकाश" शरण में आया, तुरंत हुआ निस्तारा ॥४॥

भजन (५१) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! निर्भय चोरी घुराना।
जगत माने या कुछ नहीं जाने, मुझको नहीं मनाना ॥टेर॥

स्वातः सुखकर बहु जन हितकर, योग भक्ति गुण गाना ।
ज्ञान वैराग हरि रस लीला, हरि के भजन बनाना ।।१।।
बोध नीति बिरह माधव की, गाकर दिल बहलाना ।
नवधा युक्ति भरकर शुक्ति, हमको प्रभु रिझाना ।।२।।
शुद्ध बुद्ध जग का मग सब भूला, पहन फकीरी बाना ।
ऊंच नीच प्रेमी सतसंगी, हमको लगे सुहाना ।।३।।
'उत्तमराम' गुरु गम पी प्याला, सदा बना मस्ताना ।
'रामप्रकाश' फकर गति जानि, निज में हो गलताना ।।४।।

भजन (५२) राग आशावरी पद

साधो भाई ! यह सांचा इतबारा ।
सतगुरु बिना मुक्ति नहीं होई, अनुभव किया विचारा ।।टेर।।
गुरु बिन शील ज्ञान नहि आवे, साधन प्रेम अचारा ।
गुरु बिन ध्यान नेम नहि दरसे, यज्ञ वैराग्य सुधारा ।।१।।
गुरु बिन शम दम योग न युक्ति, भक्ति न शक्ति उदारा ।
गुरु बिन भ्रम कर्म नहि टूटे, भव से नहीं हो पारा ।।२।।
गुरु बिन मति सुमति नहि पावे, रहस्य सार भण्डारा ।
गुरु बिन संशय विकार न नाशे, घट में घीर अंधारा ।।३।।
'उत्तमराम' सतगुरु कर लीजे, निश्चय हो निस्तारा ।
'रामप्रकाश' गुरु गम पाया, अपना आप अपारा ।।४।।

भजन (५३) राग आशावरी पद टोडी

साधोभाई ! दम्भी दम्भ रचावे ।
कर पाखण्ड रचे कमठाणा, डूबे और डूबावें ।।टेर।।

लोक परलोक बिगारे करणी, विषय रति नर्क सिधावे।
मकर से लूट शक्कर घृत खावत, कविता मोल बनावे ॥१॥
मांस दारू व्यभिचार तमाखू, व्यशनों में भरमावे।
नीचा कर्म नीच हठ धारे, साधु सांग लजावे ॥२॥
सतसंग साधन गूरू से बे मुख, तर्क पन्थ अलुझावे।
शिष्य मूंड मुडावे सांगी, गृह व्यवहार चलावे ॥३॥
तन मन धन हरे छल करके, भ्रम के मांही फँसावे।
'रामप्रकाश' कहै कथ सांची, सीधा चौरासी जावे ॥४॥

भजन (५४) राग आशावरी पद

साधो भाई ! सो संगत दुःख दाई।
सतसंग बैठ कुकर्म में लागा, देखो यह नकटाई ॥टेर॥
वाणी गावत सार न सूझे, बात करे चतुराई।
चाय चिलम मन बातों लागा, बाबा राग सुहाई ॥१॥
अर्थ न युक्ति नीति न भक्ति, ज्ञान विचार न राई।
गाया खूब बजाया बाजा, व्यशनों में भटकाई ॥२॥
संत रमझ की समझ न लीनी, साधन हीन पजाई।
समय बिगारे निकमा सारा, भेड़ों सम भड़काई ॥३॥
राजस तामस तार खिचाया, निन्दा झूँठ लपराई।
'रामप्रकाश' मुक्ति की आशा, यूँ मत राखो भाई ॥४॥

भजन (५५) राग आशावरी पद

साधो भाई ! महापुरुष कर्म गाई।
सतपुरुषों का धर्म स्वाभाविक, श्रुति प्रकट फरमाई ॥टेर॥

आपति कष्ट में परम धैर्य्य हो, सभा में चातुर्य लाई।
अभ्युदय में होय क्षमा भी, युद्ध वीरता छाई ॥१॥
हो अपकार के प्रत्युपकारी, यश में प्रीति पाई।
व्यशन शास्त्र में छत्र से होना, कर्तव्य पथ अटलाई ॥२॥
मनस्वी पुरुष की उभय गति हो, जैसे पुष्प गुच्छताई।
या सब के शिर ऊपर राजत, वन विलीन हो जाई ॥३॥
गूरू का शिष्य पुरूषार्थ करके, सतसंग प्रेम लगाई।
'रामप्रकाश' पुरूषोत्तम सोई, निज में निज समाई ॥४॥

भजन (५६) राग आशावरी पद प्रभाती

साधोभाई ! दुर्जन नीच सदाई ।
श्रुति शास्त्र कहे या संग त्यागो, संग ते नाहि भलाई ।।टेर।।
दुर्जन और कण्टक के दोहो, है प्रतिकार अच्छाई ।
या तो उनका मुख मर्दन कर, या परित्याग दुराई ।।१।।
दुर्जन जन को त्याग दूर से, चाहै विद्या अधिकाई ।
मणियुत शोभा सांप जहर की, भयकर कोमल ताई ।।२।।
कौआ दूध पिलाने से भी, हंस कभी ना थाई ।
खल का कर सत्कार भलापन, सज्जन से द्वैष बडाई ।।३।।
'रामप्रकाश' सांची कथ कहता, दुर्जन संग दुःख दाई ।
सतसंगत गुरु वेद मर्यादा, सृजन संग पद पाई ।।४।।

भजन (५७) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! कहूं सुभाषित वाणी ।
नीति वाक्य उपदेश सरल है, समझे संत सुजाणी ।।टेर।।

देश विदेश में विद्या धन है, व्यशनों में घी जाणी।
धर्मधन परलोक में उत्तम, शील सर्वत्र धन वाणी ॥१॥
अपना पराया गराना यह तो, तुच्छ नर सदा बखाणी।
उदार चित के सज्जन अपना, पृथ्वी कुटुम्ब मनाणी ॥२॥
कवि का काव्य बाण धुन धर का, क्या कर काम कमाणी।
उर लागत शिर नाहि घुमांवे, सो निष्काम अजाणी ॥३॥
पुरुषार्थ बिना दैव सिद्धि नाहि, इक पहिया रथ हाणी।
'रामप्रकाश' वैरागी नीति, साधन सहित निरवाणी ॥४॥

भजन (५८) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! श्रोता चार बखाना।
कथा श्रवण हित सब हो आवे, कोई लखे निज ज्ञाना ॥टेर॥
प्रथम उत्तम श्रोता सोई, वृति एकान्त परमाना।
चूँगू सार दूध उर धारे गौ वत्स सम माना ॥१॥
द्वितीय मध्यम श्रोता खूँगू कर शंका समाधाना।
चलनी सम सार को त्यागे, वार्तालाप भरमाना ॥२॥
तृतीय श्रोता काट पूगीफल, यथा तर्क बढवाना।
व्यशन अचे सूंगू सो-पूरा, सार लखे पलटाना ॥३॥
निद्रा आलस अंग जंभाई, तन मन कष्ट उठाना।
'उत्तमराम प्रकाश' श्रोता हो तुरन्त होय कल्याना ॥४॥

भजन (५९) राग आशावरी पद आशा

साधो भाई ! सुनो विचार हमारा।
हरि भक्ति बिन कोटि जनम में, होय ना कभी उद्धारा ॥टेर॥

हरि भक्ति करे सदा सुख पावे, हो भव सागर पारा।
हरि भक्ति में कारण नाहि, जाति पांति व्यवहारा ॥१॥
बिन हरि भक्ति सब ही नीचा, चारों वर्ण चमारा।
हरि भक्ति से युक्ति मुक्ति, लोक परलोक सुधारा ॥२॥
प्रेम बिना हरि और न चाहै, यज्ञ योग आचारा।
नेम विधान पूजा जप तप से, हो अन्तः करण उजारा ॥३॥
हरि भक्ति से कोटिक उधरे, पापी अनंत हजारा।
'रामप्रकाश' भक्ति के शरणे, कर हरि शंकर हमारा ॥४॥

भजन (६०) राग आशावरी पद

साधो भाई ! अपना करो सुधारा ।
मानुष देह कर परम पुरुषार्थ, हो कृतार्थ प्यारा ॥टेर॥
नरतन दुर्लभ मिला जगत में, यह नहिं बारम्बारा ।
स्वासा अमोलख वृथा खोवे, कैसे होय उधारा ॥१॥
सतसंग करो हरि गुण गावो, कर साधन सुविचारा ।
सतगुरु गम खोजो दम भीतर अपना कर दीदारा ॥२॥
पूजा पाठ यज्ञ जप तप माहि, भक्ति युक्ति कर सारा ।
ध्यान ज्ञान गम हरि का स्मरण, सन्त सेवा उपकारा ॥३॥
शील सरलता दया बुद्धि में, श्रुति सिद्धान्त उचारा ।
'रामप्रकाश' धार उर अन्तर, निश्चय हो निस्तारा ॥४॥

भजन (६१) राग आशावरी पद प्रभाती

साधो भाई ! सहज सिद्धि अब आई ।
सतगुरु कृपा साधन की संगत, निज पुरुषार्थ पाई ॥टेर॥

जा सिद्धि को जगत बखाने, दोय प्रकार सो भाई।
साधित और स्वभाविक जानो, खोल ज्ञान समझाई ॥१॥
जन्मान्तर हरि भक्ति बल ते, स्वभाविक सिद्धि थाई।
साधन कष्ट तपो मय युक्ति, ताते साधित भाई ॥२॥
यौगिक और क्रियात्मक दो है, साधित रूप लखाई।
योग रीति ने यौगिक कहिये, क्रिया विज्ञान विताई ॥३॥
सात्विक और तामसी दो है, यौगिक भेद बधाई।
सात्विक सिद्धि अष्ट प्रकार की, शास्त्र संत सुनाई ॥४॥
नाम सिद्धि पर बांकी चाल है, त्यागे फकर फिराई।
ब्रह्मात्म "रामप्रकाश" अनादों, सहज सिद्धि सुखदाई ॥५॥

भजन (६२) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! कर्म स्वरूप बखाना। ॥टेर॥
कर्म गहन गति ज्ञान मुक्ति बिन, मुक्त न होय खजाना।
तन मन वाणी द्वार तीन के, कर्म बने विधि नाना।
सुकर्म अकर्म विकर्म तीनों, एक एक का बाना ॥१॥
तामे पुनि प्रति कर्म तीन हो, विविध रूप दरशाना।
सात्विक राजस तामस गुण का, दुःख सुख फल भुगताना ॥२॥
गुण प्रति कर्म होत है त्रिविधि, जानत सन्त सुजाना।
संचित और प्रारब्ध भोग पुनि, क्रियमाण का म्याना ॥३॥
आत्म बोध ते संचित क्षय हो, प्रारब्ध भोग भोगाना।
क्रियमाण कर्ता ज्ञानो के, सेवक दुष्ट ले गाना ॥४॥
या विधि कर्म प्रस्तार प्रणाली, रूप अनेक घटाना।
तीन ते नौ नौं ते सताविस, ताते इक्कासी ज्ञाना ॥५॥

गुरु गम ज्ञान ध्यान अनुभव से, जान सके यह ज्ञाना ।
'रामप्रकाश' त्याग कर्म बन्धन, होवे तुरन्त कल्याना ॥६॥

भजन (६३) राग हेली, सहेली पद

उत्तम गुरू मन भावता, शरणे लियो विचार ॥टेर॥
कनिष्ठ विषयानन्द डोलते, भयानक करत पुकार ।
भ्रम में डोलत रात दिन, डूबे भव की धार ॥१॥
भजनानन्द में मध्यम है, रोचक कर अहंकार ।
शुभा शुभ बन्धन बांध के, कर्म करे विस्तार ।२॥
उत्तम ब्रह्मानन्द रूप सो, यथार्थ ज्ञान उचार ।
उत्तम शब्द शुद्ध रूप का, शिष्य का करे उधार ॥३॥
निशि चन्द ज्यूँ सूर सा, या विधि भेद निहार ।
पूरण गुरू परमात्मा, सच्चिदानन्द अपार ॥४॥
'उत्तमराम' गुरू उत्ताम है, उत्ताम गुरू दी सार ।
'रामप्रकाश' अघ तम कटया, तुरन्त हुआ भवपार ॥५॥

भजन (६४) राग हेली, सहेली पद

धन धन मेरे भाग है, गुरू पधारया आज ॥टेर॥
जनम मरण के फन्द हर, किया सकल शुभ काज ।
भ्रम भूत संशय हटा, अनुभव शब्द कर गाज ॥१॥
सतसंग मैं परसाय सत, भव सागर कर पाज ।
किया पार संसार से, ज्ञान चढाया जहाज ॥२॥
उत्तम भाग ते गुरू मिले, ब्रह्मनिष्ठ महाराज ।
ज्ञान ध्यान मग मुक्ति दे, पूरण बताया साज ॥३॥

गुरु गम सतगुरु श्याम की, साधन लख्या समाज ।
'रामप्रकाश' गुरू शरण में, अनहद सुणी अवाज ।।४।।

भजन (६५) राग हेली, सहेली पद

गुरु ज्ञानी जब मिलत है, तब पावे अविनाश ।।टेर।।
गुरु बिन आंधा जीवड़ा, भटकत फिरे उदास ।
भवसागर भव मांहि बहै, गल माया की फांस ।।१।।
गुरु बेमुख नुगरा फिरे, भ्रम मांहि भटकास ।
खावे गोता ज्ञान बिन, जनम मरण मग खास ।।२।।
पूर्व पुण्य प्रताप कछु, साधन स्वासो स्वास ।
पूरा गुरु पाणी मिले, सन्मुख हो शिष्य जास ।।३।।
"रामप्रकाश" निर्भय भया, काट त्रिगुण की आस ।
जीवन मुक्त कल्याण नित, नहीं हास परिहास ।।४।।

भजन (६६) राग हेली, सहेली पद

चेला गुरु का सो खरा, माने शिक्षा सार ।।टेर।।
मान बड़ाई ईर्षा, काटे दुर्गुण विकार ।
आठो मद दश दोष को, निश्चय करे संहार ।।१।।
साधन संगत प्रेम से, नियम नीति चित धार ।
दर्शन सेवा नित करे, जावे गुरु दरबार ।।२।।
व्यशन नशा सब छोड़के, सुमरे सिरजणहार ।
हरि भज निशिदिन श्वास में, छः सौ इक्कीस हजार ।।३।।
'उत्तमराम' गुरु उत्तम गुरू, ब्रह्मवेता इकसार ।
'रामप्रकाश' शरणे रह्या, होग्या भव से पार ।।४।।

भजन (६७) राग हेली, सहेली पद

गुरू को चेरो मैं भयो, मनकी ममता मार ।।टेर।।
आशा तृष्णा मोहकी, पेडी महल विडार ।
भ्रम भावना जालकी, निर्भय तोड़ी तार ।।१।।
साधन संग कर प्रेम से, सतसंग नियम सुधार ।
गुरू शरणे गुरू मुख रहया, काटया द्वैत विकार ।।२।।
मात तात सुत लोक की, एषणा सर्व उखार ।
माया भूत तीनों गुण शोध्या, सब में एक अपार ।।३।।
मस्ताना गुरू ज्ञान से, आप लख्या रणंकार ।
'रामप्रकाश' अद्वैत सो, भजन तजन सब टार ।।४।।

भजन (६८) राग हेली, सहेली पद

गुरू वाणी चित में चढ़ी, भया आज गलतान ।।टेर।।
साधन सतसंग प्रेमकर, श्रवण मनण मन मान ।
गुरू गम हृदय धारके, फकर भया मस्तान ।।१।।
लाज कान जग को मिटी, भ्रम कर्म तज आन ।
निर्मल तन मन शोध के, काटया मद अभिमान ।।२।।
ब्रह्मवेता प्रसाद से, पड़ी शुद्ध पहिचान ।
बिरह में भूषण भोग जग, भूलो खान रू पान ।।३।।
'उत्तमराम' गुरु उत्तम के, शरणे पाया ज्ञान ।
'रामप्रकाश' पद उत्तम में, हूं तूँ द्वैत विलान ।।४।।

भजन (६९) राग हेली, सहेली पद

ओम अपार अखण्ड है, स्मरण कर इकसार ।।टेर।।

सत पद रूप अकार है, त्वंपद जान उकार।
असिपद जान मकार को, अर्ध बिन्दु करतार ॥१॥
सृष्टा रजो अकार जो, शिव सो तमो मकार।
हरि सतो सु उकार है, बिन्दु सिरजरण हार ॥२॥
ओम अकार विशेष है, सोहं उकार विचार।
राम मकार में रमत है, रमभ्फ लखो चितधार ॥३॥
अकार वैराट विचारिये, उकार हिरण्यगर्भ सार।
अव्याकृत मकार सो, साक्षी बिन्दु अपार ॥४॥
ओम सौहं सत राम को, जपिये निशिदिन प्यार।
दम की गम में तार दे, छःसौ इक्कीस हजार ॥५॥
'उत्तमराम' जप ओम का, निज है मंत्र उदार।
'रामप्रकाश' निज रूप लख, हो जीवन निस्तार ॥६॥

भजन (७०) राग हेली, सहेली पद

रामरमत संसार में, युक्ति कर कर जोय ॥टेर॥
अग्निवंश रकार में, फल वैराग्य समोय।
परसराम कल तीन सो, कर्म दग्ध सब होय ॥१॥
सूरज वंश अकार में, ज्ञान सुफल कर तोय।
रामचन्द्र बारह कला, विचार प्रकाश निचोय ॥२॥
शशि के वंश मकार में फल भक्ति हरि गोय।
एक कला बलराम जी, ताप तीन सब धोय ॥३॥
चौगुण कर सब नाम को, पंचयुत दुगुण संजोय।
भाग आठ को शेष जो, रहे राम इक पोय ॥४॥
नवके पहाड़ा लिखत ही, अंक घटे नव छोय।

अचल अटल स्वरूप सत, रामप्रकाश रट सोय ॥५॥

भजन (७१) राग हेली, सहेली पद

स्मरण सुख भण्डार है, आप अखण्ड निस्तार ॥टेर॥
साधारण उपासु नियम जप, मानस स्मरण सार।
सहजो जिज्ञासु सिमरता, स्मरण तोन प्रकार ॥१॥
ओम सोहँ हरिराम को, हृदय धरो उदार।
निशिदिन सहजे जप करो, छः सौ इक्कीस हजार ॥२॥
स्मरण से सुख होत है, कटे कर्म की कार।
भ्रम अज्ञान फंदा कटे, मिटे सब द्वैत विकार ॥३॥
अंतः करण शुद्ध होय के, प्रकटे ज्ञान उजार।
'रामप्रकाश' अद्वैत में, अपना होय दिदार ॥४॥

भजन (७२) राग हेली, सहेली पद

द्वैत मिटय' ब्रह्म एक हैं, ब्रह्मानन्द इकसार ॥टेर॥
निश्चय सन्त ज्ञानी करे, अपना आप अपार।
मन ममता तज भ्रान्ति को, दृश्य भेद विडार ॥१॥
शस्त्र लोहा एक है, कंचन भूषण की सार।
मट्टी बासण कल्पना, खाण्ड खिलोना प्यार ॥२॥
उपादान दो निमित हर, कारण अध्यास निहार।
माया उपाधि द्वैत तज, अविद्या कार्य असार ॥३॥
पांच तीन मिथ्या सभी, रज्जू सर्प जिमि टार।
'रामप्रकाश' अद्वैत मैं, सोहं ब्रह्म विचार ॥४॥

भजन (७३) राग हेली, सहेली पद

तीनूँ आनन्द खोल के, प्रकट कहूं विचार ।।टेर।।
'ब्रह्मानन्द' बिन झूँठ सब, माया का विस्तार।
पांच तीन प्रपंच मिथ्या, संशय संदेह विसार ।।१।।
'भजनानन्द' में त्याग तप, कथा भक्ति प्रचार।
स्वर्ग के सुख मूल में, जनम मरण की लार ।।२।।
'विषयानन्द' जग भ्रमता, पशु पक्षी नर नार।
तन धारी सुर असुर सव, भूल भ्रम मंझार ।।३।।
दो आनन्द तज झूँठ को, ब्रह्मानन्द उर धार।
'रामप्रकाश' में मुक्त हो, आवागमन दे टार ।।४।।

भजन (७४) राग हेली, सहेली पद

सतसंगत निज सार है, करे सोई भव पार ।।टेर।।
ऋषि मुनि संत अवलिया, शास्त्र वेद पुकार।
गुणी धीर कोविद कहै, सत संगत सुखसार ।।१।।
हृदय साधन दृढ धरे, विवेक वैराग विचार।
मुमुक्षु शमादि धारके, करे तो आनन्द कार ।।२।।
मन ममता मद क्रोध को, मूला तूल विडार।
अविद्या फन्द अज्ञान को, काटो जान विकार ।।३।।
सत आतम का संग कर, निर्गुण आप अपार।
'रामप्रकाश' गुरू गम लखो, सतसंग सो ततसार ।।४।।

भजन (७५) राग हेली, सहेली पद

सतसंगत बिन जीवड़ा, वृथा करे प्रलाप ।।टेर।।

रात जगावे होड में, ऊँचा करे अलाप।
कष्ट सहे अज्ञान में, ज्ञान बिना सब पाप ॥१॥
नशा करे गप हांकता, कुसंग बैंठे जाप।
बिन सतसंग साधन बिना, भुगते तीनों ताप ॥२॥
पन्थवाद मैं धंस पड़े, निशदिन बकता श्राप।
निज घर को खबरों बिना, झूठ बतावे छाप ॥३॥
सतसंग कर निज निर्गुण की, साधन सार अजाप।
'रामप्रकाश' विकार तज, सोहं आपहि आप ॥४॥

भजन (७६) राग राजेश्वरी हेली पद

रामप्रकाश तुम उरधरो, निश्चय ज्ञान विचार ॥टेर॥
सकल विकार विडार के, जान असार संसार।
निर्पक्ष निर्ग्रन्थ वाद बिन, अनुभव ज्ञान उचार ॥१॥
सत आतम ब्रह्म एक है, साधन संग लख तार।
रमझ समझ अद्वैत की, त्रिगुण रहित अपार ॥२॥
'उत्तमराम' समझावता, उत्तम गुरू की सार।
'रामप्रकाश' निज सारले, हुआ भव से पार ॥३॥

भजन (७७) राग सोरठ फकीरी पद

फकीरी ! अनुभव करे पुकार।
भक्ति ज्ञान बोद्ध वैराग, वाणी की ललकार ॥टेर॥
कर्म उपसान ज्ञान ये तीनों, धारण कर उरधार।
मल विक्षेप आवरण काटया, अपना कर दीदार ॥१॥
तीनूँ ताप काट मन शंका, साधन संगत सार।

त्रिगुण माया भ्रान्ति ढाया, दूर अध्यास निवार ॥२
अपना आप सनातन चेतन, आपा लखत अपार।
सन्त महन्त गूढ गम आतम, द्वैताऽद्वैत बिडार ॥३
सतगुरु "उत्तमराम" अनादि, ब्रह्मवेता निरधार।
"रामप्रकाश" फकर वर पूर्ण, गुरू गम लखी विचार ॥४

भजन (७८) राग सोरठ फकीरी पद

फकीरी ! विरह की बात विशाल।
सांचा इश्क उर अन्तर लाग्या, कहूं मैं विरह का हाल।।टेर
इश्क मिजाजी और हकोकी, उलटी इनकी चाल।
दोनों जग में इश्क कहोजे, सांच झूंठ ले हाल॥१
इश्क मिजाजी झूंठा जग में, पसरया माया जाल।
तामे भूल मूल सब खोवे, पामर जीव जंजाल ॥२
इश्क हकीकी पूर्ण सांचा, धारत हरिजन लाल।
सुरता वृति मिले निज प्रीतम, प्रपंच माया टाल ॥३
सांची बिरह लगी उर अन्दर, तन मन हुआ साल।
माया रंग संग कुल न्याति, तज्या जान सब काल ॥४
विरह मस्तान फिकर तज फुरणा, पावे फकर अकाल।
'रामप्रकाश' गुरु गम फकीरी, पाया घट गोपाल ॥५

भजन (७९) राग सोरठ, फकीरी पद

फकीरो ! जल रही विरह की झाल।
झाल उठी प्रपंच विलाया, जल्या जगत जंजाल ॥टेर
कर्म क्लेश काष्ठ जल सबही, छार भया जग ख्याल।

धुंआ विकार वासना वृति, भ्रम कर्म टूटा काल ॥१॥
विरह मस्ताना आप गलताना, तजी जगत की चाल ।
राग द्वैष भोग सब भूली, विरह झाल का ह्वाल ॥२॥
मेरा संग करे जो कोई, ताको देऊँ जाल ।
जनम मरण की खोऊँ वासना, आवागमन को टाल ॥३॥
तन मन वाणी हृदय जलिया, अष्टपुरी गुण राल ।
गुरू प्रसाद गुरू गम जानी, महरम सो गोपाल ॥४॥
उत्तम जीवन उत्ताम आपा, गुरू उत्ताम की पाल ।
"रामप्रकाश" फकर संत कोई, निज में झूले लाल ॥५॥

भजन (८०) राग सोरठ, फकीरी पद

फकीरी ! विरहनि साधे कोय ।
विरह मद माती दुःखी दिन राती, बिरह का बोझा ढोय ।टेर।
पोञ्जर पीर हृदय मन घायल, ज्योति गमाई रोय ।
भोग शृंगार सेज सुख भूलो, लोक लाज कुल खोय ॥१॥
निशिदिन तलफत प्राण हमारो, निश्चल किस विधि होय ।
वन मठ शहर विचरत डोले, सुरत स्मरण में पोय ॥२॥
दिन दूनी विरह रात चौगुणी, कसे कहूं कथ जोय ।
ईश्वर वेद प्रसाद सुखादर, तन मन का मल धोय ॥३॥
गुरू कृपा साधन की संगत, सतगुरू मिलिया मोय ।
"रामप्रकाश" मिली गम गहरी, हरदम सोहम् सोय ॥४॥

भजन (८१) राग सोरठ, फकीरी पद

फकीरी ! सतसंगत कर जान ।

उत्तम गुरु के शरणे समझो, ब्रह्मरुप ब्रह्मज्ञान ।।टेर।।
उत्तम साधन उर में निश्चय, शास्त्र प्रीत संग ध्यान ।
गुरु प्रति श्रद्धा वचन विश्वासा, काट तर्क अज्ञान ।।१।।
हंस–ज्ञान में निश्चय पूरण, आप अद्वैत अवान ।
क्रिया कर्म करण त्रय काटो, त्रिपुटी त्रिगुण हान ।।२।।
मिश्री मिठास नाना खिलोना, पय में घृत पहिचान ।
सिंधु में तरंग फैन बहु भांति, द्वैत हीन विज्ञान ।।३।।
''उत्तामराम प्रकाश'' अखण्डा, अपना आप अधिष्ठान ।
''रामप्रकाश'' गुरु नहि चेला, आप सदा निरवान ।।४।।

भजन (८२) राग सोरठ, फकीरी पद ।

फकीरी ! आप अद्वैत कल्यान ।
पूर्ण निश्चय करे अवधूता, साधन सहित निरवान ।।टेर।।
हर्ष शोक बुद्धि मन थकिया, कथनी रहनी ज्ञान ।
हार जीत द्वैत अद्वैता, जनम मरण की हान ।।१।।
त्रिपुटी माया जाल दृश्य सो, मिथ्या त्रिकाल अज्ञान ।
बन्ध न मुक्त नाक नही नर्का केवल आप अबान ।।२।।
जीव न ईश ब्रह्म नही माया, कर्ता कार्य नहि भान ।
चंद न सूर तारा नहीं दीपक, गुरु शिष्य भ्रम विलान ।।२।।
ज्ञान ध्यान योग नहि योगी, नहि जगत की खान ।
''उत्तमरामप्रकाश'' अखण्डा, चेतन एक प्रमान ।।४।।

भजन [८३] राग सोरठ फकीरी पद

फकीरी ! असल करे रणजीत ।

शूरा चले फकर इस पथ में तोड़ भ्रम की भीत ॥टेर॥
छः दर्शन का काम कायर है, जाण सके नहिं रीत।
पाखण्ड छतीसों भूले डोले, ग्रन्थ पन्थ के गीत ॥१॥
अनहद नाद बजे रणसिहा, अष्ट पहर युद्ध जीत।
काया गढ़ पर राज जमावे, गुरु गम रहत नचीत ॥२॥
साधन ज्ञान युक्ति की संपति, हृदय धरे अतीत।
द्वंद प्रमाद दोष तज निर्भय, सब काहू का मीत ॥३॥
'उत्तमराम' का आदू चेला गुरु को मान नसीत।
'रामप्रकाश' फकर गति पाई, निशिदिन रहत अभीत ॥४॥

भजन (८४) राग छन्दभैरवी पद पारवा

गणपति ज्ञान भण्डार हो, सत भक्तन के सुख दाई ॥टेर॥
शंकर पिता गिरिजा वरमाता, मूषक वाहन मोदक साता।
ऋद्धि सिद्धि सुख वेद विधाता, सबके सूत्राधार हो।
निज शान्ति परम ऊचाई।१। गज का बदन सून्ड महा मोटी।
एक दन्त सुखवन्त कसोटी, गले जनेऊ शिर पे चोटी।
शिर पे मुकुट सुधार हो, कण्ठ मुक्तामाल सुहाई ॥२॥
अलका काले शोभावाले, कनक सिंहासन पे नितमाले।
उसके चाले हो मतवाले, पाश परशा कर धार हो।
भुज चार सदा चतुराई ॥३॥ रामप्रकाश जो गणपति ध्यावे।
भक्ति ज्ञान निर्भय पद पावे, कारज सकल सिद्धि हो जावे।
गुरु गम ज्ञान विचार हो, तब मुक्ति ब्रह्म समाई ॥४॥

भजन (८५) राग छन्दभैरवी पद पारवा

शिवशंकर सुख दायके, सुन अरज हमारी बानी ॥टेर॥

आप अकाल सदा अविनाशी, शिर पे गंगा शैल निवासी।
भूत जूथ गिरिजा सुखराशी, दो योग रू भोग कमाय के।
तुम जगत पति सुख खानी ॥१॥ नील कण्ठ विष पीकर जीवे।
आक धतूरा गाँजा पीवे, सिद्धि सकल वश भूत अमीवे।
माटी मदन मिलाय के, नित जग से रह निरवानी ॥२॥
नैन तीन गल रुण्डनमाला, हाथ त्रिशूल त्रिपुण्ड विशाला।
शीश जटा शशि नाग कराला, बाघम्बर तल पाय के।
हर शंकर रूप सुज्ञानी ॥३॥ पन्थवादी सो होड चलावे।
महा दुःख पावे नर्क सिधावे, शिव गुण गावे मुक्त सभावे।
शिव 'रामप्रकाश' मनाय के, निज भक्त मिले ब्रह्मज्ञानी ।४।

भजन (८६) राग छन्द भैरवी पद पारवा

बजरंग बली गुणवान हो, हरि भक्ति ज्ञान भण्डारा ॥टेर॥
लाल देह मोतिन गल माला, गले जनेऊ अंग विशाला।
कर मुग्दर पिंग नैनन वाला, तुम राम भक्त बुद्धिमान हो।
भव असुर संहारण हारा ॥१॥ विद्या भवन गुण बल चतुराई।
भक्ति मुक्ति भुक्ति के दाई, स्मरण करत महाफल पाई।
तुम ज्ञान विवेक निधान हो, भव भय से तारण हारा ॥२॥
सीता सुद्धि ले राम सुनाई, मारा निशाचर लंक जलाई।
काज किये वर भरत मिलाई, वर सिद्धि निद्धि वरदान हो।
तुम मेरे सिरजण हारा ॥३॥ मैं बालक मतिगुण गण हीना।
सब लायक तुम परम प्रवीना, राम भक्ति दे निश्चल कीना।
अब करजो आप कल्याण हो, यह रामप्रकाश पुकारा ॥४॥

भजन (८७) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सतसंगत में आय के, मैं आप भया सुखधारा ।।टेर।।
गुरू गम सतगुरू की गमचीना,श्रवण मनन निदिध्यासनकीना
ज्ञान ध्यान संत वाणी भीना, भ्रान्ति भ्रम भगाय के।
निज निर्भय भया इकसारा।१। सत संगत का महात्म परस्या।
शुद्ध स्वरूप ब्रह्मानन्द दरस्या, नहि खोया पाया ना तरस्या।
सतसंगत गुण गायके, भये ऊँच नीच भव पारा ।।२।।
भेद भाव नहीं सतसंग में, जाय जिज्ञासु रंगे हरि रंग में।
कर्म भ्रम रञ्च रहै ना अंग में, सन्त स्वरूप समाय के।
निज पावे ब्रह्म अपारा ।।३।। 'रामप्रकाश' जो सतसंग करता।
साधन सहित भवसागर तरता, अचल अखण्ड लख आप विचरता
सब अविद्या मूल मिटाय के, पद पावे ब्रह्म विचारा ।।४।।

भजन (८८) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सतगुरू गहर गम्भीर को, संत लखे विरला हरिजन है ।टेर।
अचल सनातन आप समाना, परम निजानन्द है निरवाना।
निर्गुण निरन्तर आप अबाना, सहज सिंधु सुख सीर को।
सत सच्चिदानन्द निज घन है।१। भक्तन हेतु सगुण वपु धारा
जीवन का नितकर निस्तारा, मुक्ति रूप दरशावत न्यारा।
हर भवसागर पीर को, कर निर्णय सार सब भिन्न है।२।
सागर नागर गण सब ही के, सुर नर दैत्य पूजे पद जी के।
ज्ञान निधान सर्व सुख टीके, हर भक्तन की भीर को।
संत नित अवतार सजन है ।।३।। दे उपदेश सोहं सुखधारा।

आप लखावत आर अपारा, उत्तमराम भव भेद विडारा।
"रामप्रकाश" फकीर को, निर्फन्द सदा तन मन है ॥४॥

भजन (८६) राग छन्दभैरवी पद पारवा

सतसंग साधन पायके, मैं हूआ असल मतवाला ॥टेर॥
मात तात नारी कुल लड़का, सब से तोड़या मोह का फड़का
साधन संग ज्ञान का भड़का, अपना वंश मिटाय के।
मैं निर्भय हुआ सुख हाला॥१॥ लोक परलोक की वांच्छा काटो
पांवो उलट आप में दाटी, माया बेली तज दी खाटी।
निर्मोही निज थाय के, पद पाया ज्ञान विशाला ॥२॥
जाल काल को कर सब दूरा, मन से जीता लड़कर शूरा।
'उत्तमराम' गुरु पाया पूरा, सब संशय द्वैत हटाय के।
तज चंचल जग की चाला।३॥ रामप्रकाश मैं हूं मस्ताना।
सब में जान्या ब्रह्म समाना, ऊँच नीच व्यापक अधिष्ठाना।
सत संगत में जायके, भ्रम-द्वैत सहज ही टाला ॥४॥

भजन (६०) राग छन्दभैरवी पद पारवा

सतसंगत सुख मूल है, तुम कर देखो सब भाई ॥टेर॥
गुरु गम पाय हरि को ध्यावे, संशय मूल विकार मिटावे।
ज्ञान पाय निर्भय हो जावे, कटे फन्द भव शूल है।
सत ब्रह्मानन्द परसाई ॥१॥ लाज कान मोह को तोड़े।
हरि चरणों में वृति जोड़े अपने मन को उलटा मोड़े।
खो जन्म मरण की भूल है, शुद्ध आपा संत लखाई ॥२॥
जाति पाति की नाहिं शंका, ब्रह्मज्ञान का निश्चल डंका।

नही कारण कुछ राव न रंका, सब मैं एक रसूल है।
सत व्यापक एक गोसाई।।३।। रामप्रकाश सतसंगत परसी।
सो भवसागर सहजे तरसी, भ्रम अज्ञान द्वैत को हरसी।
रामप्रकाश में भूल है सब सकार काम उडाई ।।४।।

भजन (९१) राग छन्द भैरवी पद पारवा

शठ शूना सांग बनाय के, ठग फिरे जगत में भूँडा ।।टेर।।
भेष फकीरी ठाने ठगरे, बाद विवाद तर्क में झगरे।
त्याग वेद सात अपना मगरे, भरे विकार फँसाय के।
शिरमूल मुंडावे मूंडा ।।१।। दारू मांस गांजा शठ पीते।
झटक मरे दुःख माहि जीते, नास्तिक दम्भी रह खल रीते।
भष्टाचार मिलाय के, अंत पापी अघ का कूंडा ।।२।।
गुरु सन्तों को दोष लगावें, झूँठ खोल प्रमाण बतावे।
अविद्या में सब लोक भ्रमावे, अड़े सन्तो से जायके।
अंत जावे चौरासी ऊँडा ।।३।। धिक ऐसे साधू तज प्यारे।
कर सतसंगत मोक्ष सिधारे, रामप्रकश यों प्रकट उचारे।
त्याग नीच संग धायके, मुख एक बराबर तूंडा ।।४।।

भजन (९२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

इन पंचो के जाल में, हैं कलियुग वास तुम्हारा ।।टेर।।
झूँट कपट निंदा को धारी, बात चालाकी रिश्वत भारी।
दारू मांस जूआ रति यारी, सब तन मन भरे जंजाल में।
जनहीन नहीं आचारा ।।१।। बात बनावत छिपकर खोटी।
चार पांच मिल झूँठी घोटी, बाहर पंच घरमें नही रोटी।

अधर्म अन्याय विशाल में, नहीं बुद्धि विवेक विचारा ।।२।।
छिप छिप खावे जाल बिछावे, सतगुरु हरि वेद न भावे।
शास्त्र नीति रीति नांहि सुहावे, सब दया हीन पंचकाल में।
शठ डूबे पंच भव धारा ।।३।। रामप्रकाश यों संत पुकारे।
मोटी बात करे मति मारे, सब के आगे काम बिगारे।
यम नमक भरे अन्त खाल में. कर हाहाकार पुकारा ।।४।।

भजन (९३) राग छन्द भैरवी पद पारवा

पंच सोई सुख दाय के, सत नीति न्याय उर प्यारा ।।टेर।।
सतगुरु संत की शिक्षा माने, सांच झूंठ को है ज्यूँ जाने।
मद आठों तज जग के ताने, सत शास्त्र पढै चितलाय के।
पंच निर्पक्ष होय उदारा ।।१।। तन मन वाणी धन शुद्ध राखे।
सांची बात धर्म की भाखे, जाण हलाहल कबहूं न चाखे।
सत रक्षा करे मन भायके, हो जाति-पंच सुखधारा ।।२।।
लेकर दण्ड समाज सुधारे, व्यशन विकार सभी को टारे।
ताप पाप को दूर विडारे, पंच सो परमेश्वर पाय के।
शुद्ध सांच कहे सचियारा ।।३।। राजनीति के अंग संभारे।
सतसंगत कर आवर्ण टारे, रामप्रकाश न्याय सुविचारे।
मुक्ति भक्ति निभाय के, निज मानवता अनुसारा ।।४।।

भजन (९४) राग छन्द भैरवी पद पारवा

निज अपना ज्ञान अपार है, कर साधन बिरला पावे ।।टेर।।
नाम रू रूप त्रिगुण की माया, पांच तन तीन विलाया।
अनुलोम प्रतिलोम न काया, नहीं जगत प्रपंच विकार है।

नही गावत पार न आवे ।।१।। साधन मन इन्द्रिय के पारा ।
अपना आप शुद्धानन्द प्यारा, सच्चिदानन्द मुक्त निरधारा ।
सब दृश्य द्वैत दुःख टार है, सब संत मुनि दरशावे ।।२।।
वेद पुराण ऋषि गण सारा, सनकादिक सब करत पुकारा ।
अकथ अगोचर एक है न्यारा, कर युक्ति बहु विस्तार है ।
सब भिन्न भिन्न कर समझावे ।।३।। अचलराम ने राह लखाई ।
उत्तमराम ने गुरु गम गाई, रामप्रकाश ने युक्ति पाई ।
उर निश्चय किया विचारं है, नही आय जाय नहि गावे ।।४।।

भजन (९५) राग छन्द भैरवी पद पारवा

यह युक्ति है ब्रह्मज्ञान की, संत कोई सो लखे सुजानी ।।टेर।।
चार वाणी जहँ पार न पावे, वेद विचार सभी थक जावे ।
बुद्धि विवेक प्रपंच विलावे, नही भाषा लखे विज्ञान की ।
नही लखे कोई निरवाना ।।१।। पन्थ पोल की एक न चाले ।
सीधे वचन सन्तन के हाले, मुक्ति बीच सोई जन माले ।
जब हानी हो चव खान की, सब मिट गई खैंचा तानी ।।२।।
मैं तूँ एक रहे नहीं रंच्चा, हस्ति इलम सरुर अपंचा ।
अनल हक्क सत टूँटन सच्चा, नहि गति शशि अरु भान की ।
नही पावे कोई अभिमानी ।।३।। अचलराम ने युक्ति दीनी ।
उत्तमराम ने उर धर लीनी, रामप्रकाश रमझ को चीनी ।
लख मस्त गति अधिष्ठान की, शुद्ध आप रूप मस्तानी ।।४।।

भजन (९६) राग छन्द भैरवी पद पारवा

लख पिङ्गल युक्ति सार को, कर कविता भेद मिटाई ।।टेर।।

संख्या शूचि नष्ट प्रस्तारा, उदिष्ठ पताक मेरु लख प्यारा।
अष्ट अंग धर मर्कटी सारा, लख कविता अंग विचार को।
कल वर्ण भेद मन लाई ॥१॥ जान यमाता राजभानसलागा।
गण आठों मन भय शुद्ध जागा, हभ्भधन खंभ अष्टदधागा।
मंडप मध्य प्रहार को, अंत झटक आन मत भाई ॥२॥
गुरु मुख जानो गति मतिसारी छंद रीति विधि खोल विचारी।
सम के विषम अर्ध सम भारी, बहु छंदन के विस्तार को।
सज रस अलंकार सजाई ॥३॥ रामप्रकाश वेद अंग नूरा।
'रामप्रकाश' लखे संत शूरा, रामप्रकाश लख पिंगल पूरा।
यह लखे कविजन तार को, कथ कोविद सार लखाई ॥४॥

भजन (९७) राग छन्द भैरवी पद पारवा

लख लक्ष्य सार ब्रह्मज्ञान की, पद पाय सदा अधिष्ठाना॥टेर॥
अकार मकार उकार बखाना, अर्ध विंद मिल ओम लखाना।
विश्व तेजस प्राज्ञ मिलाना, मति साक्षी जोव सुजान की।
तज तीन असत लख ज्ञाना।१। वैराट हिरण्यगर्भ भेद पिछानो।
अव्याकृत मिल ईश्वर जानो, थूल शुक्ष्म कारण तज बानो।
लख महाकारण निज जान की, सत चतुर्थ साक्षी मिलाना।२।
नौ गुण असत सत्य गुण तोना, लक्ष्य लखो कर एक प्रवीना।
सो आतम शुद्ध संत वर चीना, जग नाश मिथ्या भ्रम भान को।
पद अचल अद्वैत दृढाना ॥३॥ उत्तमराम सो आष अनादी।
रामप्रकाश सदा शुद्ध आदी, गुरु चेला सत एक संवादी।
नही आशा मस्त कल्याण की, निज एक सदा गलताना ॥४॥

भजन (९८) राग काफी पद, छन्द डेढ़ुवा

सतसंग जग में आनन्द दाता, जनम मरण को टारे, भेद विडारे।टेर।
कल्पतरू सम, पारस के वत, काम धेनु सम प्यारे, भेद विड़ारे।१।
चिंतामणि, पारस गंगाजल, काट भ्रम भवतारे, भेद विडारे।२।
त्रिगुण ताप अज्ञान मिटावे, शुद्ध दर्शावत न्यारे, भेद विडारे।३।
'रामप्रकाश' करो सतसंगत, दे फल जनम सुधारे, भेद विडारे।४।

भजन (९९) राग काफी, डेढ़ुवा पद

नरतन पाया वृथा गमाया, माया मांहि फसिया भोंदू रसिया।टेर।
सतसंग तीर्थ हरि गुरु भक्ति, जप तप नेम न कसिया ॥१॥
कर्म जंजाल जगत के मांहि, फिर कूकर सम भुसिया ॥२॥
तेरी मेरी माया मञ्जिल, सब से निशि दिन खसिया ॥३॥
करता हाका फाड़े बाका, विषया रस वश बसिया ॥४॥
'रामप्रकाश' चाहे जन मुक्ति, सतसंग कर सुख लसिया ॥५॥

भजन (१००) राग काफी, डेढ़ुवा पद

मैं ब्रह्मज्ञानी मस्त फकर हूं, पाई मस्त फकीरी, ज्ञान जगीरी।टेर।
चार कूंण्ठ चव धाम हमारा, जहां फिरुँ सुख सीरी ॥१॥
कुल कुटुम्ब सुत नार सहोदर, काटी मोह जंजीरी ॥२॥
कर सतसंगत परम पुरुषार्थ, अपना आप अखोरी ॥३॥
'रामप्रकाश' फिकर फक फाका, पाई पूर्ण अमीरी ॥४॥

भजन (१०१) राग सोरठ, फकीरी पद

ज्ञान बिना शठ भूला भटके, भवसागर की धारा, भूल मंझारा।टेर।
सांग पहन सांगी हो शूना, भ्रमे जाल संसारा, भूल मंझारा।१।

श्रार दिगम्बर पत्र पावड़ी, छापा तिलक करारा, भूल मंझारा ।२
दर्शन भेष ज्ञान बिन शूना, व्यशनों में मतवारा, भूल मंझारा ।३
अपना आपा परखे नांही, नहीं साधन सुविचारा, भूल मंझारा।४
माला धारे, सिद्धि संवारे, भुगते ताप विकारा, भूल मंझारा ।५
'रामप्रकाश' त्याग दे पाखण्ड, प्रकट करू पुकारा, भूल मंझारा ।३

भजन (१०२) राग काफी डेढुवा पद

सतगुरु ऐसा खोज पियारे, तज पाखण्ड का जाला, हो मतवाला ।टेर
कान न मूंदे, आंख न गूंदे, काटे कष्ट जंजाला, हो मतवाला ।१
बन्ध न बांधे आशन सांधे, काटे भ्रम का ताला, हो मतवाला ।२
शट् क्रिया ना मुद्रा आसन, प्राण न रुधे भाला, हो मतवाला।३
सहजे दर्शन सत दरशावे, सतगुरु का हो बाला, हो मतवाला ।४
सच्चिदानन्द स्वरुप लखावे, अपना आप अकाला, हो मतवाला ।५
'रामप्रकाश' त्याग मन मक्कर, उत्तम ज्ञान संभाला हो मतवाला ।६

भजन (१०३) राग काफी, डेढुवा पद

मुक्ति चाहै सो शरणे आवे, कर मेरा इतबारा, ज्ञान विचारा ।टेर
उत्तम जिज्ञासू प्रेम पिपासु, साधन युत मलजारा, ज्ञान विचारा।१
भ्रम अज्ञान कांटूँ सब फंदा, तुरन्त करूँ भव पारा, ज्ञान विचारा।२
जीव ईश ब्रह्म संशय काटूँ, खोलूं मुक्त दुवारा, ज्ञान विचारा ।३
अपना आप लखाऊँ निश्चय, काटूँ कष्ट अपारा, ज्ञान विचारा।४
'रामप्रकाश' खोज घट अपना, सत का करो दीदारा, ज्ञान विचारा।५

भजन (१०४) राग कान्हड़ा, चौपाई पद

सतगुरु सामर्थ सिरजण हारा, शरणे जाय करे भव पारा ।टेर

अगम निगम की रमझ लखावे, साधन सहित निर्मल दरशावे
भ्रम अज्ञान काटे सब फंदा, शुद्ध लखाय ज्ञान निर्फंदा ॥१॥
योग ज्ञान गति मुक्ति भेदा, भक्ति भाव लखत अभेदा ।
निज को जान भान सब आपा, द्वैत कलेश मिटावत पापा ।२।
आप स्वरुप लखावत पूरा ज्यूँ भृंग कीट करे लख शूरा।
चन्दन वास सभी घट जोई, मूला मूल रहे नहीं दोई ॥३॥
चेतन एक आप सुख राशी, जनम मरण ना भव की फाँसी ।
'रामप्रकाश' कृपा गुरु पाई, उत्तम भेद लखा चिद साई ॥४॥

भजन (१०५) राग कान्हड़ा, चौपाई पद

अपना आप लखे सत कोई, महरम पाय तजे मत दोई ।टेर।
ज्ञान कर्म इंद्रि, प्राण पंच जानौ, अतंःकरण भूत पंच मानो ।
काम कर्म, वासना, पुरिया, ता चिदाभास रूप जीव धरिया।१।
साधन अष्ट धरे सुख पूरा, सतगुरु रमझ लखे संत शूरा ।
आठों पुरी खोज गम खोई, जनम मरण नाहिं अब होई ।२।
सात्विक अंश अन्तः अरु प्राना, ज्ञान कर्म भौतिक तम जाना ।
आश रहित कर्म सब खोया, अक्रिय होय मूल मल धोया ॥३॥
'उत्तमराम' उत्तमगुरु पाया, जीव स्वरूप सत्य दरशाया ।
'रामप्रकाश' चेतन है सोई, अचल अखण्ड एक निरभोई ।४।

भजन (१०६ राग कान्हड़ा, चौपाई पद

सत का सत मिले सत मांहि, असत तजे मूल सब ढाहि ।टेर।
अकार उकार मकार पिछानो, अर्ध बिन्दु मिल ओम बखानो ।
विश्व तेजस प्राज्ञ सुजानो, साक्षी जीव भेद को छानो ॥१॥

वैराट हिरण्यगर्भ अव्यक्त जानो, ईश्वर चेतन सत निरवानो।
नौ तत असत छोड़ सब प्यारा, तीनों एक सत्य निरधारा।२।
या विधि निर्णय गुरु मुख सोजी, आतम जान ज्ञान अनुभोजी।
जनम मरण का मूल मिटाई, अपना आप लखा सत साँई।३।
योग न भोग द्वैत नहीं दोई उत्तमराम आप सत सोई।
'रामप्रकाश' आप अधिष्ठाना, शुद्ध निरवान अथाह अबाना।४।

भजन (१०७) राग कान्हड़ा, चौपाई पद

भ्रम विलायां भ्रान्ति ढाई, अपने आपको शांति आई।टेर।
ठुंठ में पुरुष भूमि दरारा, सीपी भोडल रूपा धारा।
स्फटिक रंग नाना विधि भासे, या विधि चेतन जगत प्रभासे।१।
जीव-जीव ईश-जीव भेदा,, जड़-जीव, ईश-जड़ छेदा।
जड़-जड़ भेद पांच निर्मूला, कल्पित अविद्या का सब शूला।२।
शस्त्र में लोह, कनक में भूषण, मिश्री मिठास, मिट्टी में बासण।
कलिषत नाना भाव अपारा, चेतन एक सर्व आधारा॥३॥
पांच तंत गुण तीन विचारे, सृष्टि-भूत मूल सब डारे।
निर्णय लख चेतन सोई, रामप्रकाश और नहिं कोई॥४॥

भजन (१०८) राग कान्हड़ा चौपाई पद

जग सब मूल भ्रम में बकिया, आतम ज्ञान अनुभव नहिं छकिया।टेर।
तीर्थ व्रत कर्म अलुझाया, निशि दिन करता माया माया।
योग यज्ञ शुभ नाना भेदा, एषणा नाना लाग बिच्छेदा॥१॥
भूला जप तप देव मनावे, ईश्वर जोड़ आन को ध्यावे।
चेतन की गम भूल गमावे, पत्थर पूज आनन्द को चावे।२।

पन्थवाद ग्रन्थ मत नाना, तुच्छ मति भ्रम भूल बंधाना ।
सत की सूझ बूझ नहीं करता, मूरख आप भूल में मरता ।३।
बिन साधन वेदान्त बखाने, सो भव मांहि बंधे भवताने ।
'रामप्रकाश' गुरु के शरणा, पाय सदा निज भव से तरणा ।४।

भजन (१०९) राग कान्हडा, चौपाई पद

पिंगल को गति जाने कोई, कोविद कविता रस ले जोई ।टैर।
भजस गुरु ले आदि मध अंता, यरत लघु गुण शोध अनंता ।
सर्व गुरु लघु मनको जानो, गण आठों लख भेद पिछानो ।१।
हझ धन घर खभ दद्धा छोड़ो, मन भय शुभ गण आदि जोड़ो ।
मंडप मध्य झटक अंत त्यागा, पिंगल युगति कर अनुरागा ।२।
संख्या मेरु पताक प्रस्तारा, शूचि नष्ट उदिष्ट विचारा ।
अष्टम अंग मर्कटी सोई, पिंगल बोद्ध गूढ़ गम होई ।।३।।
मात्रिक वर्णिक छन्द गति जाना, बाल ोखाल कढत सुजाना ।
'रामप्रकाश' छन्द बिन छन्दा, रचत हानी होय शठ बंदा ।४।

भजन (११०) राग कान्हड़ा चौपाई पद

या विधि योगी योग सुधारे, आप लखे काल को मारे ।टैर।
कर हठ मंत्र राज लय चारा, योग रीति गुरु मुख धारा ।
यम नियम आसन दृढ साधे, प्राणायाम युगति जब लाधे ।१।
पूरक पूर कुंभक दृढ प्यारा, रेचक साध क्रिया षट् गारा ।
मूल जालन्धर बन्ध उडियाना, मुद्रा पांच साध कर ध्याना ।२।
प्रत्याहार धारणा धारे, ध्यान समाधि रमझ विचारे ।
पाय अटल त्रिकुटि मंझारा, पश्चिम मार्ग सुमेरू पारा ।३।

दशवें जाय के देवे डंका, पहुंचे परम पुरुष कोई बंका ।
पग बिन मार्ग वाणी बिन बोले, पंगु नाचत अचरज ओले ।४।
जीव मिला सत शीव उजागर, द्वेत मिटा जल मिलिया सागर।
'रामप्रकाश' रही नहीं शंका, अपना आप एक निशंका ।५।

भजन (१११) राग कान्हड़ा चौपाई पद

सो ज्ञानी सुख रूप समावे, जन्म मरण में फेर न आवे ।टेर।
साधन होय विवेक विरागा, शम दम श्रद्धा संपति सागा ।
समाधान उपराम विचारा, ज्ञान तितिक्षा षट् इक धारा ।१।
मुमुक्षु होय मुमुक्षुता सोई, गुरू शरणे श्रवण कर जोई ।
मनण मान निदिध्यासन धारे, अपना आतम आप विचारे ।२।
ततपद ईश्वर निर्णय सारा, त्वं पद जीव किया निरधारा ।
वाच्यार्थ त्याग लक्ष्यार्थ जाने, निज अधिष्ठाना निश्चय आने।३।
प्रमेय प्रमाणं दो शंशय खोई, असंभावना विपरीत न होई ।
असत्वा अभाना पादक दोई, सत संग गुरु मुख खोवे सोई ।४।
आत्म रुप घटो घट बोले, निश्चय द्दढ डिगे नही डोले ।
ईश्वर जीव माया भ्रम छेदा, रामप्रकाश शुद्ध ब्रह्म अभेदा ।५।

भजन (११२) राग झंझोटी पद

आलीरी में तों ! होया मस्त फकीर ।।टेर।।
हरि गुण गाता निशि दिन माता, काटी मोह जंजीर ।।१।।
कुल तज ममता धारी समता, मारया यम को चीर ।।२।।
निर्भय निष्प्रह विचरूं नित ही, बन तरु नदियाँ तीर ।।३।।
धर्मराय का दफ्तर फाड़या, लेखा मिटया तकदीर ।।४।।

'रामप्रकाश' गुरु गम पाई, चहूँ दिशि ज्ञान जागीर ॥५॥

भजन (११३) राग झंझोटी पद

साधो भाई ! या विधि परखो आप
आप लखे बिन भूला भरमें, नहिं मिटे भव पाप ॥१॥
साधन सहित गुरु गम निश्चय, खोवे तीनूँ ताप ॥२॥
साधन संग आवर्ण हर सारा, परमानन्द कर जाप॥३॥
'रामप्रकाश' अचल सत सोई, मुक्तानन्द अमाप ॥४॥

भजन (११४) राग झंझोटी पद

आलीरी प्यारी ! पीर हिये में होय ॥टेर॥
पीर हिये को जीवड़ो जाने, और न जाने कोय ॥१॥
धान न भावे नींद न आवे, भूषण भावे नहिं मोय ॥२॥
उठत बैठत याद पिया की, हरदम स्मरण सोय ॥३॥
जग का भोग आनन्द सब त्यागया, विरहनि विरह में रोय॥४॥
'रामप्रकाश' विरह मदमातो, काण कुटुम्ब दी खोय ॥५॥

भजन (११५) राग झंझोटी पद

माई मैंतो ! योगि आदि पुरानो ॥टेर॥
पवन न पाणी, भूमि ना होती, जब को भयो दिवानो ॥१॥
तेज आकाश त्रिगुण ना होता, तब ही मैं मस्तानो ॥२॥
पिण्ड ब्रह्मण्ड माया ना खिलकी, तब को हूं निरवानो ॥३॥
अचल अखण्ड स्वरूप हमारो, कैसे बखानूँ म्यानो ॥४॥
रहित उपाधि अलंकृत हीना, गुप्त प्रकट नहीं छानो ॥५॥
'रामप्रकाश' निरालम्ब योगी, अजर अमर गलतानो ॥६॥

भजन [११६] राग झंझोटी पद

माई मेरी ! योगी भयो मन मेरो ।।टेर।।

लाज काण जग फन्दन काटया, होय गुरू को चेरो ।।१।।

स्मरण तीन चीन गुरू युक्ति, काटयो चौरासी फेरो ।।२।।

तन को योगो सब को करता, कठिन मनन को सेरो ।।३।।

मन को पकड़ योगी कर पूरा, काट संशय भ्रम तेरो ।।४।।

'रामप्रकाश' निर्भय अवधूता, वचन कहूँ अनुभेरो ।।५।।

इति स्वामी रामप्रकाशजी विरचित भजन माला समाप्त

भजन (११७) आरती पद

आरती गुरु को कर, हरष बढाय के।
हरष बढाय के, मोद मन लायके ॥टेर॥
विशिष्ठ अद्वैत मत, वैरागी अवधूत सत।
वैष्णव ज्ञान प्रेमजत, धीरज धराय के ॥१॥
रामानुज श्यामानन्द, श्रुतानन्द चिदानन्द।
पूर्णानन्द क्षिप्रानन्द, आचार्य कहाय के ॥२॥
हर्य्यानन्द राघवानन्द, श्री स्वामी रामानन्द।
अनन्तानन्द पायाहारी, अग्रदास आयके ॥३॥
विसनदास नरहरि, प्रेमपाहाडी रामदास।
नारायन संतदास, गूदड़ जचाय के ॥४॥
कृपाराम केवलराम, चतुरराम दौलतराम।
गंगाराम हरिराम, हरिरूप ध्यायके ॥५॥
जीयाराम सुखराम, अचल अचलराम।
उत्तम उतमराम, शिवरूप गायके ॥६॥
निर्गुण सगुण थाय, जिज्ञासुन हेतु आय।
शब्द को प्रसार गाय, मोक्ष मार्ग दायके ॥७॥
प्रणाली अनादि भास, गुरु परम्परा नमो।
संत रामप्रकाश यूँ, मुक्ति में समाय के ॥८॥

भारतीय समाज दर्शन

इस पुस्तक में वेद पुराण उपनिषद इतिहास तर्क—स्मृत्यादि पांच सो आर्ष ग्रन्थों के सैकड़ो प्रमाणों, उदाहरणों, टिप्पणियों में प्रचुर सामग्री द्वारा समाज के उत्थान और पतन की रूपरेखा का वर्णन करके प्राचीन वैदिक काल से लेकर इस समय तक के हिन्दू धर्म को सामाजिक वर्ण व्यवस्था शैली के सब सिद्धान्तों और प्राचीन एवं अर्वाचीन शासन व्यवस्था का अलोच्य स्वरूप तथा उस से लाभ एवं हानियों आदि विषयों को कूट कूट कर अर्थात इस छोटी सी पुस्तक रूप "गागर" में विशाल हिन्दु धर्म रूपी "सागर" भरा है अतः यह पुस्तक सब धर्मो शिक्षाओं की खान और सब ज्ञान का भण्डार है, जो सबके पढ़ने योग्य है।

आर्य—हिन्दु धर्म और मुसलमान, पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, इसाई—धर्मों की उत्पत्ति स्थान विशेषताएँ क्या हैं। वर्ण आश्रम को शास्त्रीय स्वरूप व अधिकार और आज के सामाजिक अध्ययन को पक्षपात रहित रोचकता पूर्ण विवेचन सहित लिखा गया है।

मूल्य १५) मात्र डाक खर्च सहित

(५) का मनी आर्डर आने पर ही पुस्तक भेजी जायगी।)

अचलराम-भजन-प्रकाश (सप्तमावृति)

यह पुस्तक भी काफी समय से नहीं मिल रही थी इसकी अधिक मांग देखकर फिर पांचवी आवृति छपवाई है इसमें ४०० भजन स्वामी जी के बनाये हुये है बड ही ज्ञान वर्धक भजन इसमें दिये है पुस्तकें थोडी ही छपी है। मूल्य ८)०० डाक खरचा २) अलग।

२) का मनी आर्डर आने पर ही पुस्तक भेजी जायेगी।

वाणीप्रकाश

यह ५ महात्मावों की वाणियों का संग्रह है हरीरामजी सुखरामजी जीवारामजो अचलरामजी अचल नारायणजी इन पांचों महात्माओं की वाणियों के आध्यात्मिक उपदेश है।

मूल्य ८) डाक खर्च २) अलग

राम रक्षा अनुष्ठान संग्रह

इसमें भूत प्रेत रोग संकट बाधा निवारण तथा परिक्षा नौकरी आजीविका, मुकदमा, विजय आदि धन प्राप्ती की सफलताओं के देने वाले संतवाणी के मंत्रों का संग्रह साधन विधि सहित दिया है।

मूल्य मात्र १.६० पैसे डाक खर्च १)५० अलग

नोट:— २) मनो आर्डर आने पर पुस्तक भेजी जायेगी।

पिगंल रहस्य (छन्द विवेचन)

(ले० संत रामप्रकाशाचार्य वैष्णव)

छन्द रस अलंकार प्रकार व्याकरण सहित पिगंल के संख्या नष्ट प्रस्तारादि शोडष मात्रा वर्ण अंगों को गद्य, पद्य, उदाहरण, चित्रादि में अति सरल करके लिखा है।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिये उच्च कक्षाओं को शब्द-सामग्री का चयन भो किया गया है जो वास्तव में कवि संसार को उपयोगी सामग्री है और अद्वितीय पुस्तक है जिसकी बराबरी की कोई पुस्तक दृष्टि—पात नहीं आई है।

अन्त में सैंकड़ों छन्दों के लक्षण, उदाहरण और छन्द कसौटी प्रकार आदि से पूरा ग्रन्थ नव अनुच्छेदों में देखने-पढने तथा संग्रह करने योग्य है।

मूल्य मात्र लागत ६)५० डाक खर्च २) अलग

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

आर्य ब्रदर्स बुकसेलर, पुरानी मण्डी, अजमेर

हरिसागर

(तृतीयावृति)

यह पुस्तक काफी समय से नहीं मिल रही थी अब हमने इसको भक्तों के लाभार्थ वापस बढिया ग्लेज कागज २० पाइन्ट मोटे टाइप में छपा कर प्रकाशित कराई है। दाम भी थोडे ही है।

मूल्य ६)५० रुपया डाक खरचा २) अलग

५)०० रुपये का मनीआर्डर आने पर ही पुस्तक भेजी जायेगी।

ब्रह्मज्ञान भक्तिप्रकाश

अर्थात

राम पद्धति विलास (दोनों भाग)

इस पुस्तक के दो भाग है—

प्रथम भाग में गायन के संगीत में भजन नाना रागनियों सहित भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, नीति आदि अलंकारों का वर्णन है।

द्वितीय भाग में वैदान्त की स्थूल प्रक्रिया का विशेष सरल रीति से वर्णन करके आत्म ज्ञान का निश्चय कराया है।

मूल्य केवल मात्र ६)०० डाक खर्च २)०० अलग

उत्तमराम वाणीप्रकाश

कई राग रागनियों में गाने योग्य भजनों को बड़े अनुभव से भक्ति ज्ञान, वैराग्य नीति आदि आध्यात्मिक विषयों सहित लिखा है।

मूल्य ६)५० डाक खर्च २)०० अलग

उत्तमराम भजन प्रकाश

स्वामी उत्तमराम जी महाराज कृत नाना राग रागनियों में ३०० भजनों का प्रकाशन है जिस में भक्ति, ज्ञान, अद्वैत, नीति, विरह, वैराग्य आदी कई विषयों पर कथन है।

यह पुस्तक राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा जिला पुस्तकालय खण्ड बाचनालय तहसील समिति पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत मान्य है।

मूल्य ६)५० मात्र डाक खर्च २)०० अलग

अवधूत ज्ञान चिंतामणि

झूलना, इन्दव तथा भजनों का बेजोड़ प्रकाशन है जिसमें आध्यात्मिक विषयों पर ४०० छन्द एवं ५० भजन है।

मूल्य २.५० डाक खर्च १.५० अलग

नशा खण्डन दर्पण

पच्चीस नशों का एतिहासिक विवरण परिचय को गद्य-पद्य में हजारों शास्त्र–मत मतान्तरों के साथ डाक्टर, हकीम, वैद्यों, पुराणों कुरान, बाइबिल आदि से मुख्य कारण बताते हुए नशा छोडने के उपाय भी कथन किये है।

मूल्य मात्र ३)५० डाक खर्च १)५० अलग

उत्तमराम अनुभव प्रकाश

सगुंण निर्गुंण उपदेश, निति, ज्ञान, भक्ति, अद्वैत, पाखण्ड-खण्डन आदि विषयों के संगीत भजनों का भण्डार है।

मूल्य ६)०० डाक खर्च २) अलग

गोरख बोध वाणी संग्रह

गोरख नाथ जी महाराज को कौन नहीं जानता उनकी वाणियों तथा उपदेश आज तक बाजार में नहीं मिल रहे थे अब हमने बडी हो खोज करके १ हस्त लिखित ग्रंथ से इसकी ज्यों का त्यों प्रकाशित किया है बाजार में कहीं भी गोरखनाथ जी की पुस्तक नहीं मिलतो है इसमें गोरख नाथजी ने जनता को जो उपदेश दिये है वो इस पुस्तक में दिये हैं विषय है गुरु शिष्य शंका समाधान, गोरख दत्तात्रैंय संवाद, गोरख गणेश गोस्ठी, ज्ञानतिलक अभयमात्रा कथन, बत्तीस लक्षण ज्ञान परीक्षा, सृष्टि पुराण वर्णन, चोबीस सिद्धी कथन, आतम बोध कथन, पंचाक्षरी कथन, रहराशी कथन, दया बोध कथन, ज्ञान माला कथन, रोमावली अंग कथन, पंच मात्रा कथन, शिक्षा दर्शन, अस्टमुद्रा अस्ट चक्र, नरप बोध, आतम बोध अंत में गोरखनाथजी तथा अन्य सतो के भजन देकर पुस्तक को बड़ी सुन्दर बना दी है। मूल्य सिर्फ ५) डाक खर्च २) अलग ।

नोटः– २) मनी आर्डर आने पर पुस्तक भेजो जायगी।

पताः–आर्य ब्रदर्स बुक सेलर, पुरानी मंडी, अजमेर (राज.)

मुद्रक –सूरज प्रिन्टर्स नया बाजार अजमेर ।

Scanned by CamScanner